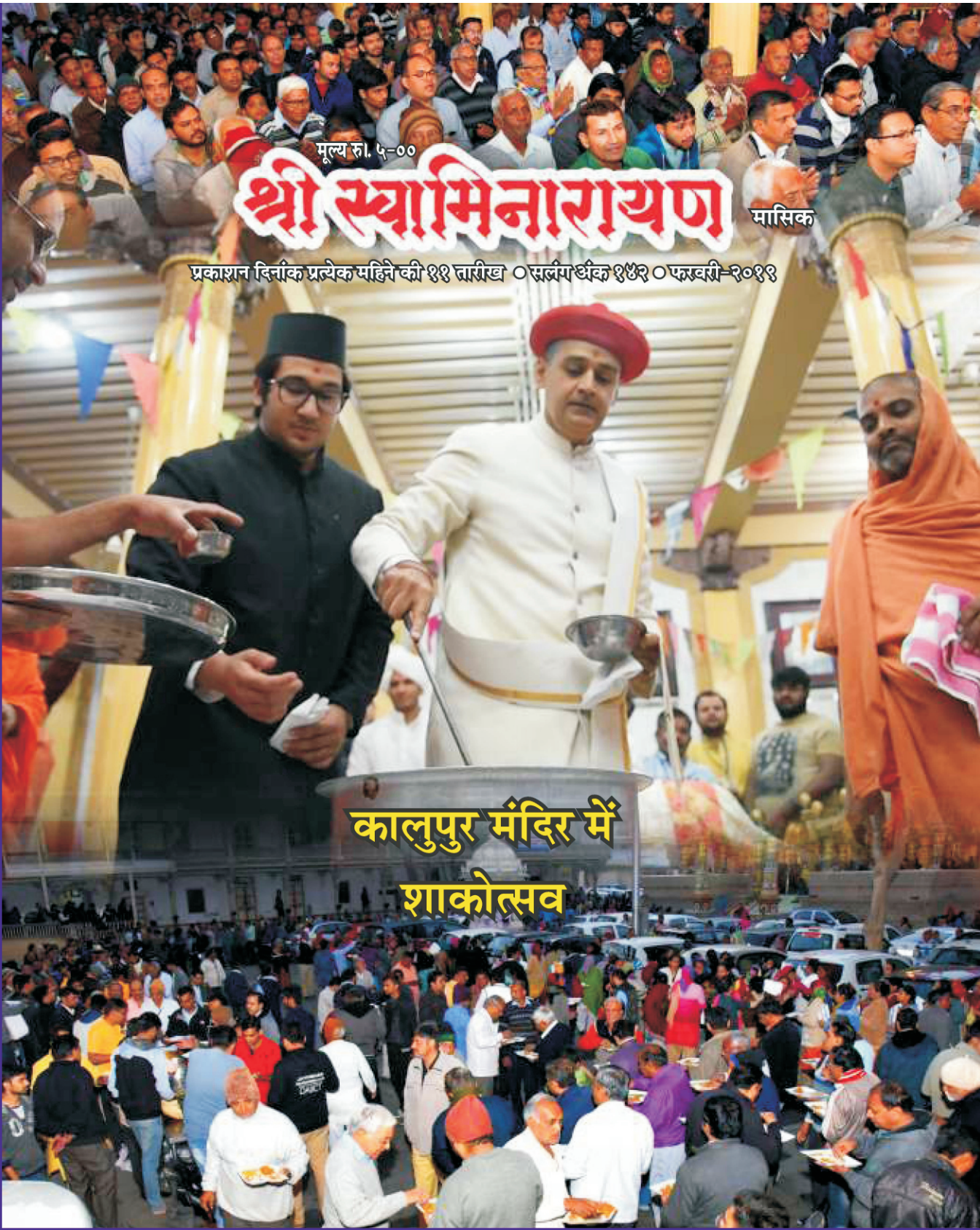

मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १४२ • फरवरी-२०१९

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

जेतलपुर

मोयब (प्रांतिज)

अपने अनेक मंदिरो में प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में कथा-पारायण

थरा (बनासकांठा)

शीलज अहमदाबाद

मोटेरा

लालोडा-ईडर

बापुपुरा (माणसा)

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १२ ● अंक : १४२

फरवरी-२०१९

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :

२७४१९५९७

प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए

फोन : २७४९९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी

आज्ञा से

तंत्रीश्री

स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत

स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

मो. ८२३८००१६६६

मो. ९०९९०९८९६९

magazine@swaminarayan.in

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	बोले बरसली की कथा	०६
०४.	दशावतारधारी श्रीहरि	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	१०
०६.	शर्करा हो तो आनन्द मिले	१३
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०८.	सत्संग बालवाटिका	१६
०९.	भक्ति सुधा	१९
१०.	सत्संग समाचार	२२

अस्मदीयम्

इस वर्ष ठंडी की ऋतुने अपना सच्चा रुप सभी को दिखाया है। तीन ऋतुओ में ठंडी सबसे श्रेष्ठ ऋतु मानी जाती है। सबको यह ऋतु अच्छी लगती है और सुंदरता भी प्रदान करती है। ये सभी प्रकृति भगवान के हाथ में है। कितना भी बड़ा वैज्ञानिक या ब्रह्मवेत्ता प्रकृति में परिवर्तन करने में समर्थ नही है। यह तो परमब्रह्म परमात्मा पलक केवल झपका दे इन प्रकार दे तो ब्रह्मांड हिलने लगे। ऐसे समर्थ हमारे भगवान श्रीहरि है। सभी के कर्ता-धर्ता एक भगवान है। उनके बल का पार कोई नही पा सकता है।

अति समर्थ युक्त पुरुष जिस देश में रहते है। उसके प्रताप से खराब देश, खराब समय, खराब क्रिया ये सब अच्छा हो जाता है। और अति पापी पुरुष जिस देश में रहते है। उनके द्वारा अच्छा समय, अच्छी क्रिया अच्छा देश सब खराब बन जाते है। इस लिये शुभ-अशुभ ऐसे देश के लिये पुरुष जिम्मेदार है। यदि पुरुष समर्थशाली है तो सभी देश, काल, क्रिया, अपने स्वभाव अनुसार बदलता है। उससे नीचले क्रम पर देश में बदलाव लाता है, उससे नीचे गाँव को बदलता है। उससे नीचे वाला पुरुष मोहल्ले को तथा उससे घटते क्रम में पुरुष घर में बदलाव लाता है।(व.प्र.प्र. ५९) ये वचनामृत अपने जीवन में अवश्य लाये।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

(जनवरी-२०१९)

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर शाकोसव अवसर पर आगमन।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर कथा अवसर पर आगमन।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणका ठाकुरजीकी आरती उतारने के अवसर पर आगमन।

१६ से २२ खीरुगोया (केन्या ईस्ट आफ्रिका) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (ईडर देश) कथा अवसर पर आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०१९)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर करजिसण पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट शाकोसव अवसर पर आगमन।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर शाकोसव अवसर पर आगमन।

श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा - दहेगाम शाकोसव अवसर पर आगमन।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप शाकोसव अवसर पर आगमन।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

एकबार संतदास स्वामी समाधिमें बद्रिकाश्रम गये थे । श्री नरनारायणदेव का दर्शन और स्तुति करके वहाँ से मानसरोवर में स्नान करने के लिये गये । ठंडक लगने से मूर्छित हो गये । तत्काल श्रीहरि भगवान श्री स्वामिनारायण आकर दर्शन दिये और उनके कृपा दृष्टि से शरीर को हस्त कमल से स्पर्श करते ही संतदासजी आँख खोले तो महाराज का दर्शन हुआ । श्रीहरिने आप को नही बोले थे फिर भी आप मानसरोवर में नहाये । इस लिये यह संकट आया । उस समय संतदासजी के साथ एक बदरीकाश्रम के संत थे । उन्हे भी श्रीहरि ने दर्शन दिया । तब मुक्तने प्रार्थना किया कि हे महाराज ! हे कृपानाथ ! आज हमारी बडी भाग्य है कि सर्वोपरि सर्वावतारी आप का दर्शन प्राप्तु हुआ । इस प्रकार बहुत अधिक प्रार्थना किये । और बोले कि हे प्रभु ! में कई वर्षो से बद्रिकाश्रम में तपस्या करता हूँ । मेरे मोक्ष तथा उद्धार का कोई किनारा नही दिखाई देता था । लेकिन आज आप का दर्शन हुआ मेरा भला हो ऐसा करियेगा । श्री नरनारायण भगवान बोले आप तप करते रहना । उस समय श्रीहरि कहे यहाँ बद्रिकाश्रम में माया नहीं है । भरतखंड में तो है । इस लिये बद्रिकाश्रम के मुक्त को माया में भेजना अच्छा नहीं है ।

तभी मुक्तने कहा, आप अपनी इच्छानुसार करे । मेरा भला हो और आप की सेवा मिले तो मैं भरतखंड के माया में रहने हेतु सहमत हूँ । आपके धाम में मेरा निवास हो ऐसी कृपा दृष्टि करे । ऐसा मनोरथ करता हूं । श्रीहरि बोले ठीक है । ऐसा कहकर श्रीहरि अद्श्य हो गये । बाद में वह मुक्त संतदासजी को बद्रिकाश्रम वापस लाये । जो संतदास की सेवा की थी । श्रीहरिकी प्रार्थना किये थे । उस मुक्त को श्रीहरिने जेतलपुर प्रसादी की वाडी में बोरसली वृक्ष के रुप मेंह में जन्म दिये । बोरसली की छाया श्रीहरि को अतिप्रिय होने के कारण

मुक्त को श्रीहरिने बोरसली की शरीर दिये । दिनप्रतिदिन मुक्त के देह में बोरसली की ऊची विशाल घट-घटा से परिपूर्ण हो गया । और श्रीहरि प्रतिक्षा करने लगे । कई वर्षो के बोरसली के शरीर में मुक्त अपनी शाखा-प्रशाखा की वृध्धिकिये । तथा उनके प्रिय प्रभु को बीच में भी धूप न लगे । इस तरह चारो दिशाओ में अपनी काया का विस्तार किये । श्रीहरि प्रातः मध्यान्ह शायं किसी भी समय बोरसली के नीचे विराजमान हो वहाँ पर कही से भी धूप नहीं आ सके इस तरह अपनी शाखाओ को पृथ्वी पर फैलाये है।

एकबार बोरसली के नीचे श्रीहरि सभा करके विराजमन थे । तभी आदि आचार्यश्री अयोध्यप्रसादजी महाराज ''हरि मिले बोरसली की छैया'' चार पदवाला कीर्तन गाये, यह सुनकर श्रीहरि अति प्रसन्न हुए । तब भतीजे अयोध्याप्रसादजी को चरणारविंद देकर सम्मानित किये । और कहे कि, ये बोरसली कौन है ? इसका इतिहास बताता हूँ बद्रिकाश्रम के मुक्त सतदासजी की अधिक सेवा किये थे । और प्रार्थना किये कि आप मुझे अपनी सेवा का अवसर दे । तो उस मुक्त को हमने जेतलपुर की वाडी में बोरसली का जन्म दिया है । बद्रिकाश्रम में से दूसरे रुप में आकर यहाँ पर बोरसली के पेड रुप में जन्म लिया है । उस मुक्त ने कहा ता । मेरी शीघ्रता से कल्याण हो और माया प्रभावी न हो ऐसा करियेगा । इस प्रकार वृक्ष रुपी शरीर में सेवा देकर, माया भी नहो और हमारी सेवा भी हो इस लिये हमने उनका बोरसली के पेडरुप से भेजा है।

उस मुक्त को हमने दर्शन दिया तब वहाँ धूप अधिक थी । वहाँ उसने छाया करके हमने स्तुति की थी कि उस मुक्त को माया में मत डालना । सेवा के लिये वृक्ष रुप में रखे है । उसकी छाया में जब-जब जेतलपुर आऊँगा तब वहाँ बिराजित हुआ और भविष्य में हमारा पंचभौतिक शरीर न हो तब भी इस मुक्त की सेवा अंगीकार करने के लिये हमारी दिव्य देह मुक्त मंडल के साथ बोरसली की छाया में विराजमान रहूँगा । सेवा भी ग्रहण करुँगा । तब तक मुक्त देह रुप में रहेगा । यह दो सौ वर्षो तक जेतलपुर की वाडी में रहकर बाद में भगवती शरीर धारण करके बोरसली में सदेह छोडकर हमारे अक्षरधाम में आयेगे । इस प्रकार की बात एक बार जेतलपुर में श्रीहरिने किया था । इस बात को संतो ने वार्ता चरित्र ग्रंथ में लिखा है । उसे हम लेख के रुप में बता रहे है।

श्रीहरि का अति प्रिय जेतलपुरधाम की अनंत विशेषताये है जैसे की सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाले महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज तथा श्रीहरि जिन्हे माँ कहकर बुलाते थे ऐसी ''गंगामाँ'' और प्रसादी की वाडी में आज की जिसकी छाया में श्रीहरि मुक्त मंडल के साथ विराजमान रहते है । वैसी ''मुक्त राज बोरसली'' उसका दर्शन करने से मन को शांति मिलती है । उसकी प्रदक्षिणा करने से जन्म-जन्म के पाप जल जाते है । अल्प समय के लिए भी बोरसली के नीचे खडे रहने से परम शांति का अनुभव मिलता है । हम लोल तो कितने भाग्यशाली है । मुक्त स्वयं बोरसली के रुप में हमें साक्षात् दर्शन दे रहे है । इसकी छाया में ढाडे होकर श्रीहरि का दसबार नाम लेने से कोई मनोकामना करने से वह अवश्य पूरी होती है । सम्प्रदाय में श्रीजीमहाराज के प्रसादी के वृक्ष की सेवा करके चले गये । लेकिन बोरसली अपने जगह पर स्थिर खडी श्रीहरि की सेवा कर रही है । इस लेख को पढकर बोरसली को याद करके कोई संकल्प करे तो पूरा होता है । भक्त देखे । इस सत्संग में कितना दिव्य खजाना भरा है । जो दूसरे के पास नहीं है । जेतलपुर दर्शन के लिये आये तब इस महामुक्त बोरसली का दर्शन अवश्य करे । जिसके छोटे-छोटे सुगंधयुक्त पुष्पो की महक से श्रीहरि प्रसन्न हुए थे ।

दशावतारधारी श्री हरि

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

अष्टपदीयम

हरिकृष्णं मानस लोककमनियमे ।हरिः।।

भजहरिमविरतम् धावतु मा ।हरिः. . . . ध्रुवपद

ततो वरेह निगम कायजलधौ ।

तमानिन्ये विधाय ततो नमनियमे ।।भज. . १

तिष्ठति कमठमये धरणीयं ।

यस्य पृष्ठे चपलभयशमनीयमे ।।भज. . २

वराहरूपधरोऽवनये सा ।

दतादैत्य जघान हि नमनियम ।।भज. . ३

दृतो नखैर्हरिणा नरहरिणा ।

दितिपत्रो द्वरदइव गमनियमे ।।भज. . ४

वसुधा दापांयेतु शचीपतये ।

बांली विप्रो ययाच फलजमनियमे ।।भज. . ५

क्षत्रियरुधिरजले स्नापयन्तं ।

जामदग्न्यो जनतापशमनियमे ।।भज. . ६

रावणनाशकरो भूविरामो ।

यशः सेतुदधेह भवदमनियमे ।।भज. . ७

बलबुधकल्किवपुषा येन चरितं ।

कृतं परंपरं पूरूश्रयणीयमे ।।भज. . ८

वासुदेवस्य धवो हरिकृष्णो ।

दशाकृति दधार बहरमणीयमे ।।भज. . ९

।। इति श्रीवासुदेवानन्दवर्णिविरचिताष्टपदी संपूर्णा ।।

भगवान श्री स्वामिनारायण को अपने सम्प्रदाय में सभी संतो ने अपने कृतियो में सर्वावतारी रुप में वर्णन किये है । वे श्रीहरि कैसे सर्वावतारी है । उनका वर्णन इस स्तोत्र में श्री वासुदेवानंद वर्णीने परमात्मा द्वारा धारित दस अवतारो का लीला चरित्र गान ये मेरे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ही है । ऐसा प्रतिपादन करने के लिये उस परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण की भजन करने के लिये वर्णीराज यहाँ प्रेरणा देते है । उन अष्टपदी अष्टको के अर्थ का हम विचार करे ।

हरिकृष्णं मानस लोककमनियमे ।।हरिः।।

भजहरिमविरतम् धावतु मा ।। हरिः. . . . ध्रुवपद

जगत के जीव मात्र कासम्बोधन करके वर्णीराज कहते है कि मानव तुम यहाँ-वहाँ गलत सही दौड मत रो ऐसे निरर्थक दौड से आप को सुख-शान्ति नही मिलेगी । तथा मोक्ष भी नही मिलेगा । बार-बार मृत्यु जन्म के चक्कर में जाना पडेगा । सिर्फ सभी अवतारो के अळतारी सभी अवतारो को धारण करने वाले ऐसे भगवान श्री हरिकृष्ण श्री स्वामिनारायण का तुम भजन करो । क्योकि इस जगत में सुंदरता में अति सुंदर प्राप्त करने योग्य यदि कोई है तो भगवान श्रीहरिकृष्ण है । इसलिये तुम सदैव उनके भजन में लग जाओ । यही तुम्हारा मोक्ष का कारण होगा । सभी को सदैव नमन करने योग्य है । उसे परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण का तुम हमेशा भजन करो । उसी में तुम्हारी भलाई है ।

ततो वरेह निगम कायजलधौ ।

तमानिन्ये विधाय ततो नमनियमे ।। भज. . १

जब हयग्रीव नाम का राक्षण समस्त वेदो एवम् समस्त कल्याणकारी ज्ञान लेकर चला गया । और जल प्रलय से जीव-सृष्टि का विनाश करना प्रारम्भ किया । तब उस राक्षस का नाश करके जगत की रक्षा करने के लिये । और वेदो का उद्धार करने के लिये मछली का रुप धारण करके सभी की रक्षा किये । ऐसे सर्वांग सुंदर मत्स्य अवतार लिये ये । इस

लिये तुम अविरत उनकी वंदना मे लग जाओ जो मोक्ष का कारण है। ऐसे सभी लोगो को हमेशा नमन करना चाहिए। उस परम ब्रह्म परमात्मा का सदैव भजन करे । उसमें अपना कल्याण है।(१)

तिष्ठति कमठमये धरणीयं।

यस्य पृष्ठे चपलभयशमनीयमे ॥ भज. . २

समुद्र मंथन के समय जब पृथ्वी रसातल में जाने लगी। तब सभी के हित के लिये कछुए का रुप धारण करके अपनी पीठ पर पृथ्वी को धारण किये। उस प्रभु की शरण में जाने से सभी के मन का विकार शांत होता है। उनकी उपासना में सदैव लग जाईए। जो मोक्ष का कारण होगा। ये सभी के लिये सदैव नमन करने योग्य है । उस परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्री हरिकृष्ण का सदैव भजन करे।(२)

वराहरूपधरोऽवनये सा।

दतादैत्य जघान हि नमनियम ॥ भज. . ३

हिरणायक्ष नामक राक्षस जब पृथ्वी को उठाकर रसातल मे ले गया। तब वाराह(सुअरजैसे) रुप को धारण करके उस राक्षस का नाश करके जगत के हित लिये पृथ्वी को पीछे लाये। जिन्हे ब्रह्माजी को आप ने सौप दिया । इस कारण से तुम अविरत उनके भजन में लग जाओ। जो मोक्ष का कारण होगा। उस परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण की तुम हमेशा भजन करो। उसमें तेरी भलाई है।(३)

हतो नखैर्हरिणा नरहरिणा।

दितिपत्रो द्वरदइव गमनियमे ॥ भज. . ४

आपके भक्त छोटे बालक प्रहलाद की रक्षा करने के लिए विराट नरसिंहरुप धारण किये। तथा हिरण्यकश्यप का जिस तरह से हाथी विशाल वृक्ष की डाली चिरती है । उसी प्रकार राक्षस के शरीरको चीर कर उसका नाश किये थे । इसलिये तुम निरन्तर उनकी भजन में लग जाओ । जिससे तुम्हारा कल्याण होगा। यह सर्वदा सभी के लिये नमन योग्य है। उस परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्री हरिकृष्ण का लगातार भजन करो। उसी में तुम्हारी भलाई है।(४)

वसुधा दापांयेतु शचीपतये।

बांली विप्रो ययाच फलजमनियमे ॥ भज. . ५

आसुरी प्रवृत्तिवाला दानवो का राजा दानवराज बलि के पास से त्रिलोकी का राज्य छुडाकर सात्विक गुणवाले इन्द्र आदि देवो को वापस दिलाने के लिए अपने वामन रुप धारण करके बलि के पास से दान में तीन पग में पृत्वी को माँगकर इन्द्र को वापस कर दिया। इस लिये तुम निरन्तर उनके भजन में लग जाओ। जो तुम्हारे मोक्ष का कारण होगा। उस परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण की तुम हमेशा भजन करो । उसमें तेरी भलाई है।(५)

क्षत्रियरुधिरजले स्नापयन्तं।

जामदग्न्यो जनतापशमनियमे ॥ भज. . ६

सत्ता के मद से मदमस्त और असुरो जैसे दृष्ट कृत्य कनरे वाले सहस्तार्जुन जैसे क्षत्रिय राजाओ का नाश करने वाले महान ऋषि जमदग्नि के पुत्र परशुराम का रुप धारण करके पृथ्वी को २१ इक्कीसबार पापियो से मुक्त किये। तथा अपने भक्तो के दुःख को दूर किये। इसलिये उनके भजन में लग जाओ। यही मोक्ष का कारण होगा। ये सर्वादारुपी के लिये वन्दनीय है । उस परमपिता परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण का निरन्तर भजन करो। इसमें ही तुम्हारी भलाई है। (६)

रावणनाशकरो भूविरामो।

यशः सेतुदधेह भवदमनियमे ॥ भज. . ७

दुष्ट कर्म करने वाला राक्षस रावण का नाश करने के लिये मर्यादा पुरुषोत्तम राम रुप धारण करके अधर्मी रावण का नाश किये। अपनी यश और कीर्ति रुप संसार सागर रुपी मर्यादा। स्त्री कुल बनाये। भक्त आप का गुणगान भवसागर पार करने के लिये करते है। इस लिये उनकी भजन में सदैव मग्न रहे। यह मोक्ष का कारण होगा। इन्हे सभी को सदैव बंधन करना चाहिए । उस परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण का सदैव भजन करे । इसी में हमारी भलाई है। (७)

बलबुधकल्किवपुषा येन चरितं।

कृतं परंपरं पूरूश्रयणीयमे ॥ भज. . ८

जगत के जीव कल्याण हेतु अर्थात मोक्ष प्राप्त हो । इसलिये पृथ्वी पर कृष्ण, बलराम, बदुध्, और कल्कि रुप धारण करके अनेक चरित्र किये है। जो क्रमशः मोक्ष प्रदान करने वाला है। इस लिये सदैव भजन में लग जाये। जो मोक्ष का कारण होगा । ये सदैव नमन योग्य है । उस परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण का सदैव भजन करे। उसी में अपनी भलाई है।(८)

वासुदेवस्य धवो हरिकृष्णो।

दशाकृति दधार बहरमणीयमे ॥ भज. . ९

वासुदेवानंदवर्णी के स्वामी समस्त विश्व में व्याप्त जीव समुदाय के स्वामी जो आज इस पृथ्वी पर हरिकृष्ण नाम धारण करके प्रगट हुए है। उन्होने ने अपने भक्तो के लालन-पालन हेतु इसके पूर्व दस अवतार स्वरुप में जन्म लिये है। जिनका एक रमणीय और गुणवान है । इसलिये इसकी भजन में अविरलग जाओ । जो मोक्ष का कारण होगा । इनको हम सब सदैव नमन करे । उस परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण का सदैव भजन करना चाहिए। इसी में अपनी भलाई है।(९)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, हीरावाडी आयोजित श्रीमद् भागवत पारायण अवसर पर ता. २०-५-२०१८ प्रसादीकी तुलसी की माला (कंठी) की यजमानो को पहनाया उसी के उपलक्ष्य में प.पू. महाराजश्री कहे थे ये कंठी पहनने के लिये है। खूंटी पर टाँगने के लिये नही है। कैसे भी अपनी दोलर वाली माया होती है। उसके उपर माला फिर माला होती है। जिसे माला पहनने में श्रद्धा हो उसे ही पहनाना चाहिए। उसे ही दे। महाराज ने दया किया है। सत्संग मिला हो और प्रभाव बढता जा रहा है। मंदिर में दूर-दूर दर्शन करने नही जाना पडे ऐसी व्यवस्था अवश्य करें। जगह खोजे, माप की खोजे चेक में शून्य अधिक नही लगाना पडे। क्यो कि चेक हमे देना है। लेकिन रुपया आपका है। आप धर्मादा देते है। दान पेटी में अर्पण करते है उन्ही रुपये से यह कार्य होता है. आप का पैसा मुफ्त में नही आता है। रात्रि-दिन परिश्रम करके मिलता है तो उस रुपये की देख भाल तो करना ही पडेगा। आप सत्संग में सहायता देते है। वडी बात है। संत तो प्रथम है लेकिन आप भी सत्संग के लिये समय देते है। ये छोटी बात नहीं है। मैं कई बार कहता हूँ कि आप को मंदिर आना होता है तो एक घंटा पूर्व तैयारी करनी पडती है। तब मंदिर पर पहुंचते है। तीन घंटा कथा में गया। आगे-पीछे की तैयारी १-१ घंटे गिने तो पाँच घंटे का योगदान हुआ। माला फेरना सत्संग करना कठिन है। मुझे भी पधरामणी में जाने के लिये अधिक सेटलमेन्ट करना पडता है।

राम स्वामी ! एक कथा का आयोजन करिए जिसमें केवल धोती-टोपी वाले पहंनावे वाले हो। बुजुर्गो ने बीजा रोपण किया। तभी तो हमें प्राप्त हुआ है। आज हम भलें ही पैन्ट उपर आ गये है। लेकिन हम तो आज भी गांव में जाते तो बडे लोग सिर पर पगडी बाँधे रहते है। मोहल्ले में खटिया या अन्य बैठने के साधन को देखकर अधिक खुशी होती है। हमारे धरोदर है। इतिहास है। लोगो के पास दंत कथा है। म्युजियममें जाये तो आप को ज्ञात होगा कि हमारे पास क्या नही है ? ये नही कि यह बनाना गया है। सभी ऐतिहासिक है।

हम अपने बच्चो को धरोहर में लैपटाप अथवा वाय-फाई दे फिर क्या ? आगे जीवन में चलकर थोडी सी मानवता आये तो वह काम में जायेाग। हम लोगो के जाने के बाद कोई कोने में भी कुछ नहीं रखेगा। लेकिन कभी कोई कहेगा अच्छे इन्सान दे तो जीवन सार्थक हो जायेगा। किसी की हम सहायता करेगे तो ही कोई अच्छा कहेगा। मानवता हमे मिली है तो उसे अवश्य प्रस्तुत करे। सब खो जाये। लेकिन भगवान और संस्कार नही खोना चाहिए। ये महत्वपूर्ण है। संस्कार अर्थात् भगवानने जो लिखा है। उस मानवता की हम बात कर रहे है। दूसरे किसी संस्कार की बात नहीं कर रहे है।

एक गाँव में हम गये थे। गाँव के चार घर सत्संगी थे। क्योकि गाँव में कोई आदमी नहीं थे। मनुष्य तो थे उसमें मानवता भी होगी। स्वामिनारयण भगवान

ने धर्म या ईष्टदेव बदलने के लिये नही कहे है । महाराज बोले है कि शैव हो तो उसे रुद्राक्ष तथा त्रिपुण्ड का त्याग नहीं करना है । अपने इष्टदेव को मत छोडे । हरिभगत की व्याख्या हम संक्षिप्त में कह रहे है । फीटपट्टी की माप छोटी है । कंठी तिलक से कोई भगत हो जाये तो सम्पूर्ण संसार भगत बन जाये । तिलक हमारे लिये है । तिलक करने के लिए जो दर्पण होतां है वह तिल ककी सेटिंग की बात तो गौण है हम तिलक योग्य है कि नही ? इसलिये दर्पण देखा जाता है । तिलक थोडा तिछा हो जाये तो चिंता नही । लेकिन यह निश्चित याद रखे की हमने जो मार्ग चयन किया है उस पर अच्छे से आगे बढे । सही-सिक्का लेकर कोई नही आया है । माला-तिलक ये प्रारम्भिक प्रतीक है । यह अपने लिये है लोगो के लिये नही है । प्रारम्भ में मंदिर की संस्कार आयेगा यदी काम में आयेगा । शेष कुछ काम में नही आता है ।

पेट पर पट्टी बाँधकर कितना भी परिश्रम करके घर बनाये हो । १० बडे रुम का घर हो लेकिन घर जर्जरित हो गया हो तो किस कामका ? इसी प्रकार हि कितने ही समुद्रि प्राप्त कर लिये हो कोई भी हमे पीछे नही ला सकता है किसी को पीछे भी नही लाना है । यह सनातन सत्य है । यह हम देख सकते है । इतन ज्ञान हो जाये तो समझ ले वैराग्य आग गया है और शास्त्र का ज्ञान भी हो गया । अर्थात धरोहर तथा दो अच्छे संस्कार देना आवश्यक है । परिपूर्ण होते-होते जीवन बीत जाता है ऐसा हम मानते है । आप भी विचार करना । अभी नही तो शयन करते समय विचार करियेगा सभी वैराग्य आ जायेंगे । शास्त्रो में जो कहा गया है । सद्‌गुण मिले ऐसा माहौल देना चाहिए । कथा-वार्ता के सिवाय अच्छे गुण नही आते है इसलिये कथा के माध्यम से दो शब्द मिलेगा तो अच्छा विचार पैदा होगा ।

गुरुमंत्र **Secondary** (गौण) वस्तु है । भगवान के दर्शन में -नरनारायणदेव के दर्शन में सब कुछ आ गया । गुरु मंत्र हमारे वैष्णव सम्प्रदाय की एक विधिहै । गुरु मंत्र अवश्य लेना चाहिए । लेकिन भगवान से अधिक कोई नही है । भगवान ही होना चाहिए । भगवान और उनके अवतारो के अलावा दूसरा कुछ नही चाहिए । कल्याण करने वाले मात्र एक भगवान ही है ।

अभी हम सरखेज के पास वणझर गये थे । वहाँ पर हनुमानजी है । शनिवार को लोग ८ चम्मच तेल चढाये है । रविवार को हमे क्या समस्या है । भीड आने पर ही हनुमानजी के पास जाये । महाराज अपनी यह मानसिकता जातने थे । दुनिया में कुछ भी न रहे, सगा, सम्बधी परिवार सब छूट जाये, किसी से कुछ नहीं हो सकता है । तब प्रत्येक से एक बार भगवान बचाये यह मुझ से अवश्य निकलता है कि अब भगवान ही बचाये तो होगा । इसलिये प्रतिदिन थोडा-थोडा अच्छा करे तो कभी रुकावट नही आयेगी ।

युवक हमारे भविष्य है । आप उनसे मिले है हम आप से मिल रहे है । आप को आगे करके संसार चलाना है । लेकिन मानवता ये सबसे बडी बात है इतना अवश्य याद रखियेगा । हम लोग महाराज के लिये गाते है कि कोई ने दुखियो रे, देखी न खमाय, दया आणी रे अति आकला थाय, अन्न वस्त्र रे, आपीने दुख टाले, करुणा द्रष्टि रे, देखी वानजवाले । इस संसार में महाराज ने अपने आचरण द्वारा सिखाये है । महाराज किसी को दुःखी नही देख सकते थे ।

आप रात्रि पारायण करते है । समय-असमय भगवान का भजन होता है तो कोई कष्ट नही । रात्रि या दिन में भगवान का भजन होता है तो ब्रह्मानंद कहते है कि हमारी दिन-दिन दिवाली । एक भगवान हमारे पास आये स्वामी बोलते की भगवान को किस दिशा में रखे ? हमने बताया, भगवान को दिशा की तकलीफ नही है लेकिन आप सही दिशा में बैठना । भगवान की दिशा निश्चित करन वाले हम कौन है ? भगवान की दिशा होती

है। भगवान की जो दिशा हो उसी के सामने हमे बैठना है ये निश्चित है। हमने कमूरात में प्रतिष्ठा किये है और मंदिर अच्छे से चल रहा है। काम योग देखकर यदि हम घर से बाहर जाये तो किसी कार्यक्रम में न जा सके। भगवान के होकर रहे। श्वास देने वाले और अन्न पचाने वाले भगवान है। हमारी १५-१६ वर्ष की उम्र थी। उस समय गाँव-गाँव में घुमते थे। उस समय गाडी मिले की न मिले काफी संघर्ष के बाद गाँव में पहुंचते थे। एक दिन थककर मोटा बापजी के पास गये। बापजी यह क्या ? बोलने में मर्यादा छोटे नही, अंदर जो था बाहर आही गया। सत्संग की बात थी लेकिन उस समय बाँपजी के मुह से जो शब्द निकले वे आज भी गाँठबाधकर हृदय में रखे है।

बाँपजी बोले, कर्ता-धर्ता भगवान को ही मानना। आप कुछ नही करते है। यह सत्य है। सत्संग बढेगा या कम होगा यह नरनारायणदेव की इच्छानुसार होगा। आप कुछ भी नही करते है। उस दिन से मैं शांति से सोता हूँ उसीत रह उठता हूँ। सत्संग का कार्य भगवान कराते है। मैं नही करता हूँ। मैं करता हूँ मैं करुगा ऐसी भावना आने पर खाई तैयार है। यह सत्य है जो भगवान को छोडकर अपने मन का करने गया है वह खाई में अवश्य गिरी है। भगवान के साथ कोने में भी कोई मेरा चित्र लगाता है तो मैं उसे निकलवा देता हूँ। भगवान हमेशा रहने वाले है। इसलिये भगवान को सिंहासन पर रखे। सिंहासन में किसी की आवश्यकता नहीं है। मनुष्य का तो कभी नही। भगवान और भगवान के अवतार तथा आपके जो ईष्टदेव हो उन्हे ही रखे। कुलदेवता -कुलदेवी को रखे तो कोई विरोधनहीं। डिवाईडर नही रखना चाहिए। बीच में पतली दिवाल **(Partition)** न रखे। उनको कोई कष्ट नही होता है। वे आमन सामने नही देखते है। सब भगवान की शक्ति ही है। हम फूटपट्टी लाकर बटावारा किये है। यह भाग इनका और यह भाग इनका है। यह कोई सम्पत्ति का बटवारा थोडे ही है। वहाँ पर सम रहे। सिद्धान्त यह है कि भगवान को हमेशा आंगे रखे। संस्कार बनाकर रखे सब प्राप्त होगा।

हमारे प्रोजेक्ट में मेरे शहर के २० मंजिले मकान के बगल में २० x २० की आकार के भूमि पर मंदिर बापुनगर के हरिभक्तो को बुलाकर बनावाय है। गाँव में जैसे चारपाई होती है, वडला होता है, ओटो होता है इसके उपर बैठकर लोग गप्पेबाजी करते है। आज गाँव में शहर ला सकते है तो हम शहर गाँव में क्यो नही ला सकते है। आप वह मंदिर देख कर खुश होगे। इस मंदिर में बिजली भी नहीं लाना है। मंदिर में दीपक होगा, पानस होगा, छत पर देशी नरियाँ होगी ? इस सम्प्रदाय में मात्र सोना, रुपया, प्लेटिनम की हीरा माणेक की ही बात नही करते बल्कि यह सम्प्रदाय मानवात रुपी धर्म की जड तक ले जाता है। इस मंदिर का दर्शन करने वाले हमेशा याद रखेगे। कुछ समय लगेगा परंतु जब कहेगे आप लोग तैयार रहियेगा। गाँव के छोटे मंदिर में जाकर देखे तो वहाँ पर इतनी अधिक सुविधा नहि होती है। फिर भी दर्शन करने से बल मिलता है। नरनारयणदेव के चरणो में सिर झूकाने से जो बल प्राप्त होता है। उसकी तुलना नही कर सकते है। तो भी ९०% बल मिलता है। हमारे पूर्वजो ने मंदिर में बैठकर भजन किये थे उनका मूल्य सम्भालना है। जडे नही भूलना चाहिए। उपदेस नही दे कहा हूँ बल्कि विनय कर रहा हूँ।

बच्चो आना। भगवान मिले, सत्संग मिले, आप मिले हम मिले, संत और शास्त्र भी मिले बाद में दूसरा क्या चाहिए ? हीरावाडी के बाद आर.सी. टेकनिकल पारायण प्रसंग में जाना है। इसलिये माला फिरता, मन फिरता है यही निश्चित नही होता है। बहुत कठिन है। सत्संग का विस्तरण हो ऐसा प्रयत्न हो उससे आनंद मिलेगा। आप सब का महाराज मंगल करे, हित करे, छोटे-बड़े शुभ संकल्प परिपूर्ण करे। यही नरनारयण के चरणो में प्रार्थना है।-

शर्करा हो तो आनन्द मिले

- चंद्रकान्त मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

नंदलाल ठाकर जब भी श्रीजी महाराज के दर्शन हेतु आते थे । तब महाराज से कहते थे कि हे महाप्रभु! एकबार हमारे घर आये । श्रीहरि कहते थे कि आप की ईच्छा है तो मै अनुकूल समय पर आऊँगा ।

एकबार श्रीजी महाराजने इच्छा व्यक्त की हमे उमरेठ जाना है । कुछ संतो-पार्षदो को लेकर उमरेठ की तरफ चल दिये ।

प्रातः काल की पूजा पाठ करके नंदूभाई बडे हुए । इतने में एक पार्षद आकर जय स्वामिनारायण कह कर कहा कि श्रीजी महाराज पधारे है । नंदूभाई की खुशी का ठिकाना न रहा । तुरंत गाँव के सत्संगी भाई-बहनो को सूचना भेजी कि श्रीजी महाराज पधारे है । सभी लोग मिलकर सन्मान के लिये तैयारी कर दिये । बहुत बड़ा गाँव मे दो ढोलक वाले थे उन्हे बुलाया गया था । ढोल बजने लगा । आगे पुरुष पीछे महिलाये हरिभक्त गते बजाते श्रीहरि के सामने आये । स्त्रियाँ कीर्तन कर रही था । ''आज मारे ओरडे रे आव्या अविनाशी अलबेल'' कीर्तन कर रहे थे ।

शतानंद मुनि कहते है कि जब भगवान या भगवान के भक्त आप के गाँव में आये और आप स्वागत हेतु जाये तो आप को पुण्य मिलता है । और जब बिदाई करते है तो तब पाप का क्षय होता है ।

श्रीहरि नंदु के घर आ गये । नंदूभाईने पूजा विधिकिये । महाराज सभी का समाचार पूछे । तत्पश्चात नंदूभाई सभी सत्संगी कुशल से ऐसा कहे । नंदूबाई श्रीजी महाराज से बोले कि महाराज अभी आम के फल का मौसम है तो रस और रोटी का प्रसाद बनाये ? महाप्रभु बोले आप अपनी ईच्छानुसार तैयार करे । रसोई तैयार हो गयी । श्रीहरि हाथ-पैर धोकर संतो को भोजन परसोने को बोले । संत भोजन हेतु बैठ गये । महाराज रस परोसते है । मूलजी ब्रह्मचारी अति सुंदर घी से पूर्ण ही रोटी परोसते है ।

रस देते समय महाराजने नंदूभाई से बोले, इस में शर्करा डाले होते तो आनंद आता, थोडी शर्करा लाये । नंदूभाई कहते है कि महाराज । हमारे यहाँ शर्करा डालने का रिवाज नही है । श्रीजी महाराज शांत रहे । थोडी देर के बाद पुनः बोले, नंदूभाई ! रस में शर्करा होती तो अधिक आनन्द आता । नंदूबई बोले, महाराज, हमारे जाति में अलग से शर्करा देने की परम्परा नही है । महाप्रभु शांत रहे । कुछ देर शांत रहने के बाद फिर बोले नंदूभाई आप शर्करा देगे । तो आपकी जाति क्या करेगी ? नंदूभाई बोले रिवाज तोडने का दण्ड मिलेगा शायद बिरादरी से बाहर भी कर दे । मैं कही का नही रहूंगा । समाज में दूर हो जाऊगा । ऐसा मैं नही कर सकता हूँ ।

संतो ने भोजन कर लिया । श्रीहरि भी खा लिये । बाद में प्रसाद स्वरुप अपनी थाली नंदूभाई को दे दिये । नंदूभाई धीरे-धीरे खाने लगे । रस खाये तो सिर के बाल खडे हो गये । अरे ! इतना अधिक खट्टा रस ! महाप्रभु ने तीन बार शर्करा माँगा फिर भी मैने नही दिया । अरे बेवकूफ नंदुडा । धिक्कार है तुम पर ? तुझे बिरादरी की परम्परा ने प्रभावित किया । समाज विरादरी से बाहर कर देगा ऐसा डर लगा । धिक्कार है, नंदुडा तुझे धिक्कार है ।

नंदुभाई के आँखो से आँसु निकल रहे थे । रोटी का टुकडा दाहिने हाथ में ही रह गया । श्रीहरि को याद करके नंदू बोले, आज से मेरे लिये शर्करा और गुड हराम है ।

नंदूभाई जब तक जीवित रहे शर्करा और गुड नही खाये । पश्चाताप की वेदना व्यक्ति को नियम सिखाती है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

इस लोटे में श्रीजी महाराजने रामदास को हलुआ भर कर दिये थे

भगवान श्रीहरि का भोजन और् भजन करने का तरीका अलौकिक था। आज की तरह उस समय में अनाज पीसने की चच्की न ही थी। छाश-घी बनाने के साधन नही थे। गैस चूल्हा की सुविधा नही थी। सबकुछ स्वयं करना पडता था। उस समय श्रीहरि हजारो संतो औह हरिभक्तो के उत्सव समैया को करते थे। उन्हे कई दिनो तक मिठाई खिलाकर तृप्त करते और हरि रस की वर्षा करते थे।

प्रेमानंद स्वामी लिखते है। वैसे

फरे पतंग मारे, वारंवार महाराज। संत हरिजन ने पीरसवाने काज॥
श्रध्धा भक्ति रे, अति धणी पीरसता। कोई ना मुख मारे, आवे लाडु हसतां॥

जिसका प्रसाद लेने के लिये ब्रह्मा जैसे लोग मछली का देहधारण करके रास्ते देखे तो भी उन्हे नही मिला है। ऐसी अमूल्य प्रसादी श्रीजी संत हरिभ्कतो को प्रेम से परोसे थे।

जिस-जिस पात्रो से श्रीहरि ने भोजन परोसा था। वे पात्र भी अमरता को प्राप्त किये है। वे ही अक्षयपात्र है। उसी में से कल्याण कारी भोजन हुआ है। श्रीहरि के स्पर्श से ये महाप्रसादी के पात्र के बारे में वर्णन स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामी पुरुषोत्तम प्रकाश प्रकार १९ में लिकते है कि

जे जे वस्तु स्पर्शी हरि अंग रे, ते ते कल्याणकारी जेम गंग रे...
स्पर्शी वस्तुए मंगलकारी रे, त्यारे पुरुषोत्तमनी रीत न्यारी रे.....

श्रीहरि जब उनावा में आये तब रामदासडाई हरि भक्त के घर से संत हरिभक्तो ने हलुआ का पकवान बनाकर सबको तृप्त किये थे। उस समय श्रीहरि ने स्वयं इस घडे में। कठारी में हलुआ भर के पंगत में बार-बार परोसे थे।

श्रीजी के आँखो में से और हाथ के पात्रो में से अखंड अमृतधारा पसोती है उनकी कृपा लीला की बात ही न्यारी है। आज भी उन पात्रो का दर्शन करके श्रीजीकी मूर्ति नजर में आती है। हृदय में शांति का ऐहसास होता है। इस महामूला प्रसादी के पात्र का दर्शन अपने स्वामिनारायण म्जुयियम में हाल नं. ४ में होता है। सभी हरिभक्त भावपूर्वक इसका दर्शन करियेगा।

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची जनवरी-२०१९

दि. ०६-०१-२०१९	श्री जनकभाई गोकलभाई पटेल - लवारपुर
दि. २७-०१-२०१९	श्री प्रकाशचंद्र बलदेवदास पटेल - अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि जनवरी-२०१९

दि. १०-०१-२०१९	श्री नरनारायणदेव महिला मंडल नारणपुरा संकल्प मूर्ति-घनश्याम महाराज की रजत जयंती महोत्सव के लिये।
दि. १७-०१-२०१९	श्री खीमजी रवजी वाघजीयाणी - सिडनी-आस्ट्रेलीया।
दि. २०-०१-२०१९	श्री मावजीभाई मोहनभाई - वणोक-भाल- ह. संजय (आस्ट्रेलीया) तथा विजय।
दि. २३-०१-२०१९	श्री अम्बालाल चतुरभाई छगनभाई पटेल - पोर।
दि. २६-०१-२०१९	श्री जयदेव खुशवदन भट्ट - सेटेलाईट।
दि. ३०-०१-२०१९	श्री आत्मारामदास चेलदास पटेल - वडूवाला निरभाई मिस्त्री सांयन्ससीटी।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-जनवरी-२०१९

रु। ५१,०००/-	अ.नि. जशवंतलाल अमुलखभाई दोषी - ह. रमेशभाई जे. दोषी पी.एच.डी. हुए उस अवसर पर - अहमदाबाद
रु। १८,१००/-	एक हरिभक्त - ह. पार्षद कनु भगत
रु। १४,१००/-	गोपीबेन घनश्यामभाई काकडिया - यु.एस.ए.
रु। ११,७५०/-	पपू.अ.सौ. गादीवालाश्री के चरणो में भेट ता. १०-१-१९ अभिषेक अवसर
रु। ११,०००/-	महेन्द्रभाई रतिलाल ठक्कर - अहमदाबाद
रु। ११,०००/-	दिलीपभाई जोईतारामदासजी - सिडनी - ह. रागिणीबेन दिलीपभाई दरजी - ओस्ट्रेलिया तथा जीगर दीलीपभाई दरजी हेमांगीबेन जीगरभाई दरजी
रु। ६,०००/-	प्रजापति जीवीबेन बहेचरभाई - कोलवाडा
रु। ५,००१/-	पटेल हितेन अरविंदभाई नौकरी के लिये - इटादरा
रु। ५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी - बोपल

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

दया आये तो दर्शन दीजियेगा

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

बाल मित्रो ! हम सब भगवान की भक्ति करते है । भजन करते है, प्रार्थना करते है । ये बात सही है लेकिन ये भगवान सुनेगे कब ? जब हृदय की सच्ची पुकार होती है । ये कैसा होता है । यह इस प्रसंग के उपर से समझ में आयेगा ।

जब संतो को स्वामिनारायण भगवान ने मनाकर दिया कि कोई मेरा दर्शन करने नहीं आये । इस आज्ञा से संत लोग दुःखी हो गये । खुले आसमान में रहने के लिये संत दुःखी नही थे ? भले ही ठंडक हो । कच्चे आटेका नींबू जैसा गोला एक बार पेट मं उतार दे तो भी संत दुःखी नही होते । यह समस्या संतो को परेशान नही करते है । लेकिन एकबार परेशान करती थी कि महाराज का दर्शन न होना । यह बात काटे की तरह चुभता था । दुःखी संतोने ब्रह्मानंद स्वामी से बोले कि हे स्वामी ! आप कोई उपाय करे, दर्शन हो इस तरह की छूट प्रदान करिवाये दूसरा कुछ नही चाहिए । ब्रह्मानंदजी सोचते है, इन सभी संतो को इतना कष्ट है, मुझे भी है । दर्शन की भेट मुझे भी तो है । स्वामीजी हाँ कह दिये । संत खुश हो गये । बड़ा वकील जैसे कैसे लेता है तो ऐसा लगता है । कि हमजीत जायेगा । ब्रह्मानंद ने यह केस हाथ में लिये ।

ब्रह्मानंद स्वामी ने एक पत्र लिख कर तैयार किया । यह महाराज को देने के लिये कौन जाये । गढपुर के पास वाडी में एक चौदह पंद्रह वर्ष का बालक कोश चला रहा था । स्वामी देखे । स्वामी बोले ''बालक ! एक कार्य करोगे ? क्या कार्य है ? इस पत्र को स्वामिनारायण भगवान को देना है । तुझें तो ज्ञात है न कि गडढा गाँव में दादा खाचर का दरबार है । उसमें स्वामिनारायण भगवान निवास करते है । बच्चा बोला यह मुझे ज्ञात है लेकिन चिठ्ठी देने नही जाऊँगा ।'' क्यो ? मुझे कोई कष्ट नही है यदि मैं पत्र देने गया तोमेरा कोश चलना बंद हो जायेगा । स्वामीजी बोले, कोश मैं चलाउगा । तुम चिठ्ठी दे आओ'' ब्रह्मानंद ने कोश चलाकर दिखाया तब लडका पत्र देने के लिये तैयार हुआ ।

महाराज जहाँ रहते थे । वहाँ पर लडका पत्र लेकर गया । वहराँ पर जाकर बोला ''कोई स्वामीजी ने यह पत्र दिया है । भगवान के पास यह पत्र आया है । पत्र में क्या होगा ? यह पत्र अपने सत्संग समाज में पहचान वाली है । इस पत्र में कोई अद्रभूद समर्पण है । शरणागति है । सर्व प्रथम स्वामी सम्बोधित करते है ।

सुनो चतुर सुजान, एम न घटे रे तमने दीनानाथजी ।

मेरे प्राण के आधार जैसे रखेगे वैसे रहेगे वैसे बचन का पालन करेगे । इसके आगे हे प्रभु, हे परमात्मा, हे इष्टदेव ऐसा नही कहूँगा । ''सुनो चतुर सुजान'' किसी आदमी को समझाना हो तो हम कते है कि आप बहुत अच्छे है, समझदार है । विवेकशील है । स्वामी भगवान कहते है कि सुनोचतुर सुजान आप अच्छे से अच्छे सुजान, जानकर हे । चतुर अर्थात बुद्धिशाली है । आप को यह शोभा देता है ? ''ऐम न घटे रे तमने दीनानाथजी'' आपका नाम दीनानाथ । दीन-दुखिया के आप स्वामी है । आप मेरे आक्सीजन है''प्राण के आधार'' आप न होते तो ये प्राण भी नही होता इसे कहते प्राणाधार । ''जेम राखो तेम रहीये वचन ने साथ जी'' । हमे कोई परेशानी नही है । कोई विरोधभी नही है । आप के वचन का पालन हमारा जीवन है । हमारा कर्म है हम अपना कर्तव्य वहन करेगे ।

अमे तम कारण सह्या मेणा, नाथ निरखईने सुणवा वेणा ।

अमे तृप्त नव कीधा नेणां ....सुनो चतुर सुजान

समाज में गाँव-गाँव में धुमते है । वहाँ हमारा अपमान होता है । और ऐसा शब्द बोलते है कि पूछने की बात ही नही । लेकिन ये हम भूल जाते है । इन लोगो की बात सुनकर आपको खुश रखने के लिये सहन कर लेते है । हम लोगो की एक ही ईच्छा है । कि हम को तो ''नाथ निरखवाने सुणवा वेणा'' इन आँखो से हमें अपने नाथ को देखना है । और उनकी वाणी सुनना है । लेकिन ''अमे तृप्त नव कीधी नेणां'' अभी साधु हुए कुछ वर्ष ही हुआ है । इस तरह का अकाल आ गया । कैसा अकाल ? दर्शन का अकाल ।

अमे लोकलाज कुल की लोपी, अमे कहेवाया गिरधर नी गोपी

अमे तम कराण पहेरी टोपी....सुणो चतुर सुजाण

आप जैसे बोले वैसे हमने किया । कंतान पहनाये तो कंतनना टुकडा लपेटकर समाज में गये । लोग क्या मजाक करेगे । इसकी लोक लाज को भी छोड दिया । हमारा संसार भले ही मजाक करे । जो कहना हो वो कहे हमारे लिये समाज की वह बोली प्रिय लगी । क्या शब्द ? ''कहेवाया गिरधरनी गोपी'' देखे वह स्वामिनारायण साधु जा रहे है । ये शब्द हम को अमृत के समान लगता था । किसके साधु ? स्वामिनारायण के साधु है । ''अमे तम कारण टोपी पहेरी'' यह एक शब्द प्रयोग है । हम लोग आप के सामने आत्म समर्पित है । हमने सब कुछ लुटा दिया है । बाहुबरी सम्पत्ति का त्याग कर दिया । फिर भी हमारी अहम, मैं ज्ञानी हूँ, चालाक हूँ पढा हूँ ये सब त्याग दिया । आपके नाम की टोपी धारण कर लिया है ।

पहेली प्रती करी शीदने आगे, दूधदेरवाडी ने मार्या डांगे
पछी तेने ते केवुं वसमुं लागे.....सुनो चतुर सुजान ।

मेरे प्राण के आधार जैसे रखेगे वैसे रहेगे वैसे हे महाराज: आप चतुर ज्ञानी है । हमारी इस स्थिति को आप देखे । यदि आप की ऐसी ईच्छा थी ये सभी दूर रहे तो पहेले से सोचना चाहिए था । किस लिये प्रेम में बांधे ? आवकार दिये सबको प्रेम से बुलाये । ''पहेली प्रीत करी शीदने आगे'' पहले किस लिये प्रेम किये ? आप ऐसा घोखा-कपट किये । कोई भूखा, प्यासा व्यक्ति हो, लो यह तपेली में दूधहै ? लो ये दूधले लो । वह तो भूखा ही था । दूधपीने आया था । जब दूधकी कटोरी हाथ में लिया तभी डंडा उठा लिये । ये कैसा ? वह भूखा था अर्थात् भगवान के प्रति भूखा हमें परमात्मा के चरण की भूख थी । दर्शन की भूख थी । साथ रहने की भूख थी । इसलिये हम लोग आये । बाद में उसे कैसा लगेगा । स्वामी कहते है । यपहले आपने इस स्वरुप को बताया, ये दिव्य दर्शन, सानिध्य का सुख दिये । हम सब आये और आप भगा रहे है । दर्शन करने के लिये मना कर रहे हैं । हमारा हृदय कितना दुखी है । किससे कहने जाये ? यहाँ पर शिकायत करें?

काई दया आवे तो दर्शन देजो, नहीं तो अखंड अंतरमां रहेजो
एम श्रीरंगना स्वामीने कहेजो.....सुनो चतुर सुजान ।

हमें ज्ञात है आप दयालु है । इसके बाद भी आप के सामने हमारा वस नही चल रहा है । चलने की इच्छआ भी नही है । हमें दलील भी नही करना है । हम शरण में आये है । हम आप के पास है । हमारे शिकायत स्वीकार हो ऐसा भी न हो । लेकिन एकबात अवश्य ध्यान दीजियेगा ।

हमारी अनुभव है आप दयालु है, फिर भी आप के सामने हमारा बस नही चल सकता है। चलाना भी नही चाहते है । हमें कोई दलील भी नहीं करना है । हम शरण में है । हम आप के शरण में हमारी कोई शिकायत चलेगी नही । लेकिन एक बात पर ध्यान दे । आप को ऐसा लगे कि संतो की बात सच है तो बुलाकर दर्शन दे । हृदय में निवास करे । आगे कुछ नहीं कहना है । ''एम श्रीरंगना स्वामीने कहेजो, सुणो चतुर सुजाण'' यग संदेश सद्भावना का पत्र लाने वाला बच्चे को तुरंत श्रीजी महाराज बोले, जल्दी जाओ, उन संतो को यहाँ भेजो । दूसरे सभी संतो को भेजो । और बालक स्वामी के पास जाकर हाथ जोड़ता है । बाद में महाराज का संदेश स्वामी को बताया । आप सभी को जाना है । स्वामीजी हाथ उठाये कई संत वाडी में बैठे थे । सभी महाराज के पास जाने के लिये दौडे । भूखे मनुष्य को जैसे भोजन मिले इस प्रकार दौड लगाये । ये सत्पुरुष दौडते-दौडते गढपुर आ गये । स्वामिनारायण भगवान का दर्शन होते ही दंडवत प्रणाम करने लगे । श्रीजीमहाराज खडे होकर एक-एक संत को अपने आलिंगन किये । संत आप तो मेरे जीवन है । आप सब कुछ है । आप हमारे सम्पत्ति है । आप हमारे हृदय है । आत्मा है । स्वामिनारायण भवानने संतो को अपने पास रोके । संत खुश हो गये । सभी आनंदित हो गये ।

मित्रो ! ब्रह्मानंद स्वामी रचित इस कीर्तन में हृदय की सच्ची पुकार है । हम भी इस प्रकार भगवान की प्रार्थना करेगे तो अवश्य भगवान सुनेगे । हमारा मनोरथ पूरा करेगे ।

●

बुद्धि की परीक्षा

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

जीवन के किसी भी क्षेत्र में परीक्षा महत्वपूर्ण पडाव होता है । छोटा बच्चा जैसे जैसे परीक्षा देकर उसमें सफल होता जाता है । वैस-वैसे एक-एक सीढ़ी आगे चलता है । अध्ययन पूर्ण हो जाने के बाद अध्ययन वाला परीक्षा तो पूरी हो जाती है । बाद में सही परीक्षा आती है । पढने समय की परीक्षा निश्चित समय सारिणी के साथ पूर्ण हो जाती है । यह पहले से ज्ञात भी हो जाता है । लेकिन जीवन की परीक्षा कब आयेगी । सूचना नही होती है । लेकिन यह परीक्षा मूल स्वभाव

का ज्ञान करा देती है । प्रत्येक मानव में कुछ न कुछ अच्छाई होती ही है । उसके गुण को पहचान कर उस व्यक्ति को वैसा ही कार्य दना चाहिए । इससे अच्छा परिणाम प्राप्त होगा । आज ऐसी ही बात का अध्ययन करेगे ।

बारह महीने कल-कल पानी की आवाज आती हो । अच्छा वातावरण हो । इसी तरहके गांव में लोग सुख शांति से रहते थे । पानी की सुविधा होने के कारण कृषि और व्यापार के कारण पूरा गाँव सुखी था । ऐसे सुखी सम्पन्न गाँव में राजा के महल जैसा सात-तल की हवेली थी । इस हवेली में गाँव के प्रमुख रहते थे । केवल सम्पत्ति में ही नही अपने गुण में श्रेष्ठ थे । उनके गुणो की चर्चा हर जगह होती थी ।

समय अपना कार्य सावाधीनी से पूर्ण करता है । इस सेठ के तीन पुत्र धीरे-धीरे बड़े हो गये । पत्नी और पति व्यस्त होने का कारण भी अपने बच्चो को अच्छे संस्कार दिये । वे युवावस्था वाले बच्चो में दिखाई देता था । अच्छे गुण के कारण ये बच्चे अपने पिता के साथ कृषि और व्यापार में सहयोग देने लगे । तीनो पुत्रो की शादी सद्‌गुणी लडकियो के साथ हुआ । सेठ का कार्य बार बच्चो ने सम्भाल लिये थे । अब सेठानी भी अपना कार्य भार कम करना चाहती थी । अपना कार्य सौपने से पहले तीनो पुत्र बधुओ की परीक्षा लेने का बुनाई । उन्होने तीनो बहुओ को अपने पास बुलाई । और तीनो को एक-एक मुठ्ठी अनाज दी । और बाद में बोलो ये अनाज मुझे दो वर्ष के बाद वापस देना होगा । तीनो समझ नही पाई लेकिन अनाज ले गयी ।

तीनो बहुएँ अपने विचार अनुसार इसका प्रबन्धकिये । बडी बहु ने कहाँ इस अन्न का संचय करना कहाँ आवश्यक है । हमारे पास तो अनाज का भंडार है । अभी यह अनाज पक्षीयो को खिला दे । जब सासु माँ मागेगी तब संग्रह अना जसे उन्हे दे देगे । उसे उसको अपने हिसाब से प्रबन्धकिया ।

दूसरी पुत्रबधुने सोचा, सासुमाँने सुरक्षित रखने के लिये कही है । इस लिये इसे बचा के रखे । वह जैसे हीरा मोती गहने जैसे सुरक्षित रखे जाते है । उसी तरह उस अनाज को तिजोरी में रख दिया । तिसरी बहू यह सोचने लगी कि सासु माँ को सुरक्षित रखने के लिये बोली है । यह तो अनाज है । रखने से अच्छा कुछ उपयोग हो तो ठीक है । यह सोचकर वह खेत के एक भाग में उस अनाज की बुबाई कर दी । छः महीने में यह अनाज पाँच किलो जितना हो गया । फिर बोया दो वर्ष में मुठ्ठी भर अनाज में से गाडी भर जाये इतना अनाज हो गया था ।

दो वर्ष के पश्चात सेठानी ने तीनो पुत्र बधु को बुलाकर दो वर्ष पहले दिये गये अनाज की माँ की शीध्रता के कारण बडी बहु कोठार से अनाज लाना भूल गयी । इस कारण सेव ह बोली मैंने तो अनाज चिडियो को खिला दिया । अभी लाना भूल गयी । दूसरी बहुने अपना रखा हुआ अनाज सेठानी के हाथ में दे दिया ।

अब तीसरी बहु का क्रम आया । उसने कहा अभी लाती हूं । सेठानी बोली मुठ्ठी भर अनाज साथ नही ला सकती हो । उसने कुछ उत्तर नही दिया । वहाँ तो गाडीभर कर नजर आया । सेठानी गाडी वाले को बोली कि हमने तो अनाज नही मंगाया है । अभी क्यो लाये ? तब छोटी पुत्र वधु बोली, माँ आप के द्वारा दिया गया अनाज हमने खेत में बो दिये थे । उसमें से इतना अनाज पैदा हुआ है ।

सेठानी अत्यंत खुश हुई । छोटी बहु को धर के भंडार तथा अन्य चाभिये को दिया । शेष दो बहुओ को लगा कि ये हमसे श्रेष्ठ हो गयी । तभी सासु ने कहा तुम दोनो भी होशियार हो । आप को आप के गुण अनुसार जिम्मेदारी ढूँगी । मध्यवाली बहु से बोली आप के अन्दर सुरक्षा देने का गुण है । इस लिये गहनो की चाभी तुम्हे देती हूँ । उसे आप को सम्भालना है । बडी बहु की उत्सुकता बढ गयी । इन दोनो को प्रभार मिल गया मुझे क्या मिलेगा ? तबी सासु माँ बोली ! बड़ी बहु तुम्हे इन दोनो से अच्छा कार्य प्रदान कर रही हूँ । वह धर्म का कार्य है । तुम दान-पुण्य करो । कथा-वार्ता कराओ । साधु ब्राह्मण को भोजन कराओ । ये सब तुम्हारा काम है ।

सेठानी के बुद्धि युक्त निर्णय से तीनो बहुए अतिखुश हुई । तीनो की योग्यता अनुसार परीक्षा लेकर काम को दी थी । बिना दुःखी हुए तीनो ने अपनी जिम्मेदारी उठाली । तीनो बहुओ के लिये आदरणीय भी बन गयी ।

मित्रो ! इस बात से सिद्ध होता है कि प्रत्येक मानव मे अलग-अलग बुद्धि होती है । किस में क्या गुण है उसी अनुसार उसी काम देना चाहिए । को कार्य सफल होगा ।

इसी कारण से हमारे इष्टदेव ने शिक्षापत्री में छासठवे श्लोक में आज्ञा किये है कि ''जिस मनुष्य के अन्दर जो गुण हो उसी के प्रति विचार करके प्रेरणा देना चाहिए । जो कार्य के प्रति प्रेरित न हो उसे कभी उस कार्य को नही देना चाहिए ।''

भक्तिसुधा

BHAKTI-SUDHA

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "जीवन के प्रतिक्षण में सावधान रहे कि कर्म बंधन से कैसे बचे ?"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

कर्म किये बिना किसी को कुछ भी नही मिलता है। कर्म करना ही पडता है। और कर्म करना मनुष्य का स्वभाव है। क्रम छोडकर भगवान की पूजा करना कठिन है। क्यो कि ? सब कुछ छोडकर प्रार्थना करने बैठे तो दिमाग में कई विचार आते है। ये विचार भी करना कर्म है। इससे भी कर्म बंधन होता है। अर्थात् कर्म किये विना कोई इन्सान रह नही सकता है। क्योकि ? इस जगत में तीनो गुण मनुष्य में कम या अधिक होते ही है। गुण की प्रधानता कर्म पर से निश्चित होती है। कुछ लोग ब्राह्मण कुल में जन्म लेते है उनका मुख्य कार्य जानार्जन करना है। और ज्ञान देना भी है तो जो सतो गुण दर्शाता है। क्षत्रिय हो तो दूसरे पर शान करता है। जो रजोगुण प्रधान होता है। और तमो गुणी दूसरे के कार्य को बिगाडने मे अपने बल लगाता है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वभाव से प्रेरित होता है। ब्राह्मण है तो शस्त्र नही चला सकता है। शस्त्रधारी शास्त्र पढा नही सकता है। राजा को जंगल में भेज दे तो भी वह शासन करेगा। व्यापारी को तीर्थ स्थान पर भेजे तो वह वहाँ पर व्यापार का अवसर खोज लेगा। तो कहने का अर्थ यह है कि जिसके अन्दर जिस गुण की प्रधानता होगी वह कही नही जाती है। आप कही पर भी जाये स्वभाव साथ में ही रहता है। कर्मबंधन से मुक्त होने के लिये। संसार त्यागना आवश्यक नही है। लेकिन कर्मफल की आसक्ति न रखे। हमारे जो कर्म है मुख्य रुप से तीन है। ''क्रियमाण' 'संचित' और 'प्रारब्ध' 'प्रत्येक क्षण मन, वचन कर्म से जो कार्य होता है। वह क्रियामण कर्म है। प्रत्येक कर्म का फल तुरंत नही मिलता है। क्रियामण कर्म संचित कर्म में बदलता है। और उसका फल निश्चित समय के बाद मिलता है। और भगवान द्वारा मिलता है। क्योकि ? कर्मफल प्रदाता भगवान है। और संचित कर्म जब 'सघन' हो जाता है। तब प्रारब्धबदल जाता है। और प्रारब्धकर्म ही कारण है। हमारे आने वाले जन्मो का अपना प्रारब्धकर्म यही कर्म बंधन कहलाता है। कार्य करते समय ऐसा कार्य करना या क्या ध्यान देना कि कर्म बंधन नही। इस लिये हमेशा जागृत रहना पडता है। जो कुछ को सोच कर करे। हम प्रातः जगते है कितने सचेत रहते है। आज क्या भोजन बनाना है ? किससे मिलना है ? क्या पहनना है ? अपने सौंदर्य और जगत के कार्यो के लिये सजग रहते है। आत्मा की सुंदरता के लिये सजग रहना चाहिए। कई बार हमारे शरीर में रोग न हो पहले से दवा ले लेते है। तो कर्मबधन नहो पहले से सावधान रहे। तो कैसे सावधान रहे ? कई बार ऐसा अनुभव होता है। कि कुछ भी न करे तब भी अपने जीवन में दुःख आता है। पहले ऐसा लगता है कि हमने क्या किया है ? तो ये प्रारब्द है। प्रारब्धकर्मो के फल स्वरुप दुःक भोगना पडता है। जिससे हमे कुछ लेना-देना नही होता है। ऐसे व्यक्ति मिलते है। वह अपने को परेशान करते है। जो अपना प्रारब्धहै। उस व्यक्ति को प्रेरित करता है। सामने के व्यक्ति का दोष नही देखे। जीवन में क्षमा माँगना और देना सीखे। दूसरे से भूल हो तो माफ करे। और अपनी भूल कोई बताये तो क्षमा याचना कर ले। बीच में अहम नही लाये। इस क्या विशेष ध्यान रखे। जीवन में किसी के कर्जदार नही बने। किसी के श्रृणी न बने। कोई आप को कुछ मदद किया हो तो कुछ भी न कर सको तो धन्यवाद अवश्य करे। क्योकि ? किसी का कर्जदार होकर मोक्ष नही लेना चाहिये। ये कर्मबंधन में रुपान्तरित हो जाता है। उसे पूरा करने के लिये पुनः आना पड सकता है। और स्वयं का अकर्ता 'मानना' तथा कर्म की स्वतन्त्रता की जिम्मेदारी दोनो स्वयं लेना विरोधाभासी है न ? इस तरह रहना उचित है ? इसके लिये दोनो को अच्छे से समझना लेना होगा। शरीर हम नही है आत्मा है जो कार्य करता है शरीर करती है। आत्मा नही करता है। काम करते-करते अकर्ता का भाव बनता है। कर्म की स्वतन्त्रता की जिम्मेदारी स्वयं लेना है। क्योकि ? हम कुछ करते है तो जिम्मेदारी भगवान पर डाल देते है कि भगवानने कराया है। इस लिये कर्ता-धर्ता भगवान है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कोई कार्य करने के लिये उसके जीवनमें आने वाले संयोगाधीन होता है। ये सही है। लेकिन कोई भी व्यक्ति यदि प्रयास करे तो उसके जीवन में होने वाला खराब कार्य नही हो सकता है। वह रोकने में सक्षम है। भवानने थोडी आजादी हमें भी दिये है। क्योकि कोई कार्य करने से पहले विचार करना चाहिए कि इसका परिणाम क्या प्राप्त होगा ? जो हम करते है उसके जिम्मेदार हम ही है। कर्म फल देने वाले ईस्वर है। लेकिन कर्म करने के लिये सभी जीव स्वतन्त्र है। प्रश्न यह उठता है कि कैसे कर्म बंधन होता है। तो महाराजने स्वतंत्रता क्यो दिये ? हम सब परमात्मा के अंश है। परमात्मा अंशी है। इस

अंशी का गुण भी हममें आता है । परमात्मा परम स्वतन्त्र है । इसलिये थोडा कुछ हम भी स्वतन्त्र है । क्योकि ? पूरा समुद्र ही नमकीन होता है । उसमें से दो बूंद पानी लेगे तो वह दो बूद पानी भी नमकीन होगा । और दूसरा उत्तर है स्वतन्त्रता इस लिये दिये है कि 'माया' या भगवान का प्रेम हमे क्या चाहिए ? ये हमें निश्चित करना है । तो वह चयन करने के लिये 'स्वेच्छाशक्ति' भी होनी चाहिए । क्योकि ? अपने चयन करना है । तो हम सभी तो परमात्मा को पसंद किये है । इसलिये यहाँ पर बैठे है । परमात्मा को पसंद किये है । परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पित रहे । या माया की शरणागति स्वीकार करे । ये हमारे बस की बात है । मायारुपी जाल कैसा है । अब मछुवारा समुद्र में जाल डालता है । तो मछलियाँ जाल में नही फसती है । जो मछुवारा के पैर के पास रहती है । वैसे हम लोग भी मायारुपी जाल रहते है । लेकिन परमात्मा के चरणो के पास रहेगे तो मायारुपी जाल में नही फसंगे । इस जगत में माया का चलता है । जैसे मंत्री का अपने राज्य में चलता है । वह भी राजाज्ञानुसार ही होता है । जैसे राज्य में मंत्री की आवश्यका होती है । वैसे जगत में माया की आवश्यकता है । क्योकि माया के बगैर सृष्टि नहीं चलती है । लेकिन हम लोग माया में फँस जाते है । यही हमारी सबसे बड़ी भूल है ।

●

पूजा

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

श्री स्वामिनारायण भगवानने इस भरतखंड में आकर ब्रह्मांड के असंख्य जीवो के कल्याण के लिये अनेक प्रकार के उपाय किये है । अपना पुरुषोत्तम स्वरुप अनेक रुपो में प्रगट करके असंख्य जीवो को अपने स्वरुप कानिश्चय कराये है । अनंतकोटि मुक्तो, मुमुक्षु, विषयी और ज्ञानी जीव अनेक प्रकार से पूजे है । असंख्य जीवो को अपने स्वरुप की मूर्ति द्वारा सम्बन्धरहे इस लिये मंदिर बनवाये तथा मूर्तियाँ लगवायी । तथा अपने आश्रितो को प्रातः पूजा करने के लिये स्वयं चित्रकार नारायणभाई के पास से अलग-अलग ग्यारह चित्र बनाकर अपने भक्तो को पूजा करने के लिये प्रदान किये । श्रीहरि की स्वरुप निश्चित करने के पश्चात उनकी पूजा करना चाहिए । तथा कल्याण और उत्थान का मुद्दा बनाये थे ।

पूजा करने योग्य मात्र एक परमात्मा ही है । पूजा धातु के उपर से पूजा शब्द बना है । इस में चार तत्वो की उपस्थिति आवश्यक होती है । (१) पूजक अर्थात् पूजा करने वाली या वाला (२) पूज्यपात्र - जिसकी पूजा करना हो । (३) पूजा सामग्री - जिसके द्वारा पूजा की जाती है । (४) पूजा विधि- अर्थात पूजा करने का तरीका है । पूजा सार्थक और सफल हो इसके लिये चारो का होना आवश्यक है । दूसरी चार विषय और भी है । (१) बाह्य और आन्तरिक शुध्धि(२) मन की एकाग्रता (३) ईष्टदेव का रुप (४) निष्काम भक्ति-भाव पूजा में केवल प्रेम हो पूजा में लेना नही सर्वस्व देना होता है ।

पूजा शब्द में दो अक्षर है । प औरज अर्थात् पाप कर्म और ज अर्थात् जन्म-जन्मान्तर । जन्म-जन्मान्तर के पाप का नाश होता है । उसी का नाम पूजा है । पूजा शब्द प में उ जुडा है । अर्थात् रक्षा पूजा करने से सर्वदा रक्षा होती है । दूसरे अक्षर ज में मिला है । "आ" अर्थात् पीछे मुडना है ।

जीव-जगदिश्वर से अलग होकर माया के साथ जुड़ गया है । योग के द्वारा जीव माया से अलग होता है । फिर से जगदीश्वर के साथ जुड जाता है । उसे पूजा कहते है । विषय रुपी वासना मनुष्य के शरीर में व्याप्त हो गया होता है । इस जहर को दूर करने के लिये जिसके कृपा से दूर होते है । और निर्वासनिक बनते है उसी का नाम पूजा है । पूजा मुमुक्षु जीवन का संरक्षण कवच है । संसार रुपी जहरीला सांप है । जीव रुपी नेवला है । यह प्रतिदिन युद्ध करता है । साँप के जहरीली दंश से बचने के लिये साँप को मारने का बल प्राप्त करने के लिये नेवले को बार-बार नोलवेल के पत्ते को बार-बार सुंधना पडता है । उसी प्रकार मुमुक्षु जीवको संसार रुपी विष न व्याप्त हो । इस लिये पूजा करना पडता है । पूजा काल कर्म और माया के सिर उपर पैर रखकर भगवान की सेवा में पहुंचाने में सरलता प्रदान करता है । यह सरल-सीधा और कभी निष्फल नही होने वाला सुरक्षित माध्यम है ।

पूजा के लिये शुद्धता : पूजा प्रारम्भ करने से पहले, पूजारी को सर्वप्रथम सर्वांग शुद्ध होना चाहिए । स्वयं देव के योग्य होना चाहिए । पूजारी को आन्तरिक और बाह्य शुद्दता रखना होगा । सूर्योदय से पहले मल-मूत्र का त्याग करना चाहिए । आँख, कान, दाँत, जीभ मुँह हाथ और पैर के आठ अंगो को जल से स्वच्छ करना चाहि । फिर छने पानी से स्नान करना चाहिए । जल की शुद्धता मात्र कपडे से छानने से ही नही होती है । जहाँ से स्नान हेतु जल ले जलाशय और जलस्थान शुद्ध होना चाहिए । स्नान वाला पात्र शुद्ध होना चाहिए । स्नान करने वाला पानी किसी के द्वारा स्नान किये जाने के बाद वचा वाला नही होना चाहिए । स्नान करने वाले को जल तीर्थ स्थानो केनाम का स्मरण-कीर्तन करना चाहिए । इतना करने के बाद जल स्नान हेतु शुद्ध होता है । स्नान के विना पूजा नही किया जाता है । बिना पूजा के परमेश्वर खुश नही होते है । पूजा का आधार स्नान की शुद्धता पर आधारित है।

स्नान के बाद धुला हुआ एक कपडा पहनना चाहिए । एक ओढना चाहिए । जो पूजा के ध्यान में स्थिर हे । पूजा पूर्व और पूजा पश्चात किसी वस्तु का स्पर्श नही करना चाहिए । स्त्री वर्ग की पूजारिन, धुली साडी, साया, ब्लाऊझ पहनना चाहिए ।

पूजा हेतु बैठने वाला स्थल स्वच्छ और शुद्ध होना चाहिए । आसनी, ऊन, रेशन या सूती कपडे का होना चाहि । मृग चर्म या व्याध्र चर्म का भी उपयो गकर सकते है । पूजा करने के लिये केवल जमीन, कागज या पत्थर उपर नही बैठना चाहिए । अच्छी तरह से बैठ के इस तरह का आसन होना चाहिए । भगवान के आसन से पूजारी का आसन निम्न तल पर होना चाहिए । आसन गंदा नही होना चाहिए ।

पूजा बताये गये उपचारो के आधार पर होना चाहिए । आवाहन आसन, पाध्र्य, अर्ध, आचमन, स्नान वस्त्र, यज्ञोपवित आभूषण, चंदन, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य, मुखवास, आरती, प्रदक्षिणा, नमस्कार, मंत्र, पुष्पांजली, नाम जप, प्रार्थना और विसर्जन । ये सभी उपचारी से करना चाहिए । ये सभी उपचार शुद्ध होने चाहिए। पूजा अंतर के सुख भाव, प्रेम भाव, से करना चाहिए । भाव युक्त पूजा सार्थक होतीहै ।

पूजा पश्चात शिक्षापत्री अवश्य पढना चाहिए । पढने नही आता हो तो, पढने जैसी स्थिती न हो तो उसे सुनना चाहिए । बाद में जनमंगल स्त्रोत्र पढना चाहिए । दोनो हाथ जोडकर क्षमा याचना करना चाहिए । बाद में विसर्जन करना चाहिए । इस प्रकार पूजा करना चाहिए । बाद में व्यवहारिक कार्य के लिये बाहर जाना चाहिए ।

•

"आइये भगवान के साथ स्नेह रखे"

- लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

कलियुग में परमात्मा को प्रसन्न करने का सच्चा मार्ग भक्ति मार्ग है । सामान्यत लोग भक्ति अर्थात् भगवान के सामने दीपक जलाना मानते है । फुल समर्पित करना, भोगलगाना, आरती करना ही मानते है । लेकिन नारद मुनिने कहा है कि वे भक्ति प्रेम रुपा है । जिसमें भगवान के प्रति अगाधप्रेम प्रगट हो, जिसमें भगवान का चिंतन हो, सभी प्रकार की उपासना हो । यही सच्ची भक्ति है । भगवान के प्रति स्नेह है । यदी सच्ची भक्ति रखने वाला व्यक्ति कभी भगवान से याचना नही करता है । कारण यह है कि भगवान योग्य मनुष्य को, योग्य समय पर, योग्य वस्तु समयपर दे ही रहे है । भक्त भक्ति के बदले में भगवान के पास से भगवान का अनन्य स्नेह माँगता है । मात्र भावन को हृदय में रखने की तीव्र आकांक्षा रखता है । भगवान उसे जिस की अवस्था में रखते है उस अवस्था में वह आनंद से रहता है । शास्त्र भी कहता है अनन्य भक्ति से भगवान मिलते है । भगवान को भक्त अच्छी भक्ति से ही पहाचन सकता है ।

जो भक्ति के मार्ग का चयन किया है । वह भक्ति मार्ग का अनुकरण करता है । वह परम भाग्यशाली होता है । कारण हजारो जन्मों में तप दान और समाधिसे साधना की जाय तो पाप का क्षय होता है । और भगावन की भक्ति होती है । भगवान श्री स्वामिनारायण प्रगट पुरुषोत्तम है । अपनी मूर्तियो में आचार्यश्री में तथा सच्चे शास्त्रो में साक्षात् विराजते है । उनके प्रति किस तरह की सच्ची भक्ति करे । सद्गुरु निष्कुलानंद स्वामी विरचित स्नेह गीता में सरल और स्पष्ट रुप से समझाये है ।

भक्ति करने वाले व्यक्ति को भगवान के उपर अतिशय स्नेह होना चाहिए । भक्ति तो रावण भी करते थे । वह जहाँ जाते ते वहाँ पर सोने के शिवलिंग को पूजा हेतु ले जाते थे । शिव के सामन वे नृत्य भी करते थे । लेकिन इसके पीछे वे सत्ता की लालसा और भोग का वरदान प्राप्त करना चाहते थे । यहाँ पर भगवान के प्रति कही भी स्नेह नही था । ऐसे स्नेह की तुलना में जप, तप, तीरथ, यज्ञ, दान, पुण्य और नवधा भक्ति का मूल्य भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रित सच्चे स्नेह से कम माने ।

"जप तप तीरथ जोग यज्ञ स्नेह समान नव देखियु,
दान, पुण्यने व्रतविधिकरे, भक्ति नवा कोय,
स्नेह विना सरवे सुनु जेम भोजन धृत वीण होय"

भगवान के साथ स्नेह और भक्ति विना जल का सरोवर, सुगंधविना पुष्प स्नेह के विना हृदय निर्थक है । अगनपंक्षी जमीनसे सीधे आकाश की तरफ उडते हुए मधुर आजाव के साथ गीत गाता है । लेकिन वहाँ छोडकर वह जमीन पर स्थित अपने घोसले से वापस आ जाता है । उसी प्रकार भगवान श्री स्वामिनारायण पर दम्भयुक्त भक्ति करने वाले व्यक्ति भक्ति ऊँची दिखाते है । फिर संसार के मायाजाल में वापस आ जाते है ।

सच्चा स्नेह होने पर सत्संगी प्रतिदिन परमात्मा की बन्दना में व्यस्थ रहता है । एक दिन सिर का बाल धोकर अर्जुन कृष्ण की गोद में सिर रखकर सो रहे थे । तब रुक्मणीने कृष्ण से सवाल की "आप अर्जुन के प्रति इतना स्नेह क्यो रखते है ?" श्रीकृष्णने रुकमणी से कहा कि अर्जुन के बाल के पास कान लगाओ । रुकमणीने जब अर्जुन के बालो के पास कान लगाया तो अर्जुन के प्रत्येक बाल से "श्रीकृष्ण शरणम् मम्" का मंत्र सुनाई दे रहा था । गोपियो ने भी इसीप्रकार स्नेह युक्त प्रेम कि थी।

गोपिकाये ऐसी प्रेममयी भक्ति भगवान के किये थे । आज भी इन गोपिका की कीर्ति गायी जाती है ।

"भूत भविष्य वर्तमान मां
कोई से स्नेह तुल्य नथी आवतुं
निष्कुलानंदना नाथजीने,
स्नेह विना नथी भावतुं ।

श्रीजी महाराजने प्रति इस तरह का स्नेह जिसके हृदय में होता है । उनके उपर श्रीजीमहाराज खुश होते है । पूजा और भक्ति के बाह्य दिखावा और दम्भ से श्रीजीमहाराज प्रसन्न नही होते है ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में शाकोत्सव मनाया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारयण मंदि कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में पवित्र खरमास में ता. ६-१-१९ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कमलो से भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । अलौकिक शाकोत्सव की वधार प.पू. लालजी महाराजश्रीने किया था । उसकी सुगंधअच्छी तरह से प्रसरित हुई । हजारो श्रीहरि भक्तोने और मुमुक्षु भक्तोने ऐसा दिव्य प्रसाद वैंगन की सब्जी, बाजरा की रोटी मक्खन, छाश, गुड, मूली आदि का प्रसाद लेकर धन्य हुए । ऐसे भव्य आयोजन में पू. महंत स.गु.शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से कोठारी जे.के. स्वामी, भंडारी जे.पी. स्वामी, भक्ति स्वामी, आदि संतो और हरिभक्तनो अत्याधिक सुंदर सेवा प्रदान किया । (शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

ओला (कलोल) गाँव में शाकोत्सव का भव्य आयोजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर ओला में खरमास में ता. १८-१२-१८ के दिन पू. हरिचरन स्वामी (कलोल) पू. महंतश्री पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) श्री वल्लभ स्वामी (इसंड) आदि संतो ने औला के हरिभक्तो ने कथा-वार्ता किये । तथा ठाकुरजी के सामने भव्य शाकोत्सव मनाया गया । जिसमें गाँव के भाई और बहनो ने प्रेरक सेवा प्रदान किये । १८०० जितने मुमुक्षुओ ने शाकोत्सव का महाप्रसाद लेकर धन्य हुए । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

गोता गाँव में भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पू. शा.पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर) के मार्गदर्शन से गोता गाँव में ३०-१२-१८ के दिन भव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा. व्रजभूषण स्वामी आदि संत मंडल ने कथा वार्ता लाभ देकर भव्य शाकोत्सव का वधार करके १००० जितने भक्त प्रसाद लेकर धन्य हुए । ऐसे सुंदर प्रयास से यहाँ के भक्तो में का उत्साह वृद्धि के कारण आने वाले समय में सभाओ के माध्यम से उत्सवो का सुंदर प्रबन्धहोगा । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मनगर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा हिम्मनगर मंदिर के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. ३०-१२-१८ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गाय । इस अवसर पर वाली, बीलिया, कालुपुर, लालोडा और सापावाडा से संत आकर श्रीहरि की लीला की बाते सुनायी थी । सभी ने प्रेरणात्मक सेवा प्रदान किये थे । पूरे पवित्र खरमास में श्रीहरि नाम स्मरण धून किया गया था । ता. ३१-१२-१८ को वकतृत्व स्पर्धा में बालको की भागीदारी अच्छी थी । ता. ३-१-१९ के दिन हरिभक्तो द्वारा बनाये गये सुंदर भोजन का अन्नकूट श्रीहरि को चढाया गया था । ता. १०-१-१९ के दिन दाहोद जिले के आदिवासी क्षेत्रो में लोगो के लिये आवश्यक सामान का वितरण भी किया गया था । (विपुल भगत हिम्मनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा स.गु. महंत स्वामी अधर्मनाशकदासजी की प्रेरणा से तथा उनावा गाँव के सभी हरिभक्तो के सहयोग से ता. १४-१-१८ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । पूरे अवसर पर पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर महंतश्री) तथा शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) मार्गदर्शक थे । इसके यजमान अ.नि. नारणभाई मकनदास पटेल और अ.नि. सूरजबा नारणभाई पटेल परिवार रहा था । सभी हरिभक्त संतो के द्वारा कथा-वार्ता का पान करके तथा शाकोत्सव का आनन्द लिये । (शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गाँधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर मंदिर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर में ता. ५-१-१९ के दिन लवारपुर के सभी गाँव के सभी हरिभक्तो के साथ सहकार से तथा मंदिर के ट्रस्टी, युवक-महिला मंडल की सुंदर सेवा से भव्य शाकोत्सव मनाया गया । शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी शाकोत्सव की महिमा एवम् कथा वार्ता का सुंदर लाभ दिये । ५०० से अधिक गाँव तथा आस-पास के भक्तो ने शाकोत्सव का लाभ लिया । (कोठारीश्री लवारपुर)

बापुपुरा (माणसा) में त्रिदिनात्मक रात्रि कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा संचालित श्री नरनारायण युवक मंडल द्वारा पवित्र खरमास में श्रीमद् सत्संगिजीवन त्रिदिवसीय रात्रि कथा ता. ७-१-१९ से ९-१-१९ तक गाँव के युवक तथा समस्त गाँव की ओर से तन, मन और धन के सहयोग समर्पण से पूरा हुआ।

कथा के वक्ता पद पर स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) ने अपने मधुर वाणी में संगीत के साथ शास्त्र के माध्यम से सर्वोपरी श्रीहरि की महिमा समझाये। कथा पूर्णाहुती की आरती पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी गाँधीनगर ने उतारा तथा सभी को आशीर्वाद प्रदान किये। आगामी वर्षो के लिये इसी तरह के आयोजन का संकल्प लोग लिये। कोठारी श्री डॉ. जयेशभाई सोनी की सेवा की प्रशंसा किये।(स्वा. घनश्यामजीवनदासजी - गाँधीनगर

जेतलपुरधाम में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

संकल्पमूर्ति श्री रेवती बलदवेजी हरिकृष्ण महाराज के दिव्य सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के पू. स.गु. महंत शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा. पी.पी. स्वामी और पू. महंत श्री के.पी. स्वामी की प्रेरणा से गामडी गांव के प.भ. नटवरभाई पटेल के संकल्प से ता. ७-१-१९ से १३-१-१९ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। जहाँ वक्ता पद पर पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम पू. पी.पी. स्वामी)ने बिराजकर मीठी स्वर में संगीत के साथ कथा का अमृतपान कराये। इस अवसर पर सभी बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. मोटा गादीवालाश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री धर्मकुल आकर यजमान परिवार के साथ सभी श्रोताओ को आशीर्वाद प्रदान किये। तीर्थो से सांख्ययोगी बहने भी आयी थी। कथा में आने वाले उत्सवो और जन्मोत्सव को उल्लास पूर्वक मनाया गया। जेतलपुर, गामडी, बारेजा, असलाली, नवागाम, बारेजडी, महिजडा पालडी काकज, वसई दसक्रोई के हजारो मुमुक्षुओ ने कथा श्रवण करके धन्य हुए। अमेरिका से भी यजमान परिवार के आमंत्रण से उनके परिवार के लोग कथा सुनने आये थे।

समग्र अवसर में जेतलपुर के संत मंडल, कर्मचारी मंडल, ब्राह्मण विद्यार्थीओ और जेतलपुर गाँव के समस्त भक्तोने प्रेरणायुक्त सेवा किये थे।(महंतश्री के.पी. स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंचवटी) भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी में ता. २१-१-१९ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया था। इस अवसर पर जेतलपुर धाम से पू. शा.पी.पी. स्वामी, पू. के.पी. स्वामी, पू. भक्तिवल्लभ स्वामी, मकनसर के पू. हरिप्रकाश स्वामी, ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (छपैया), भानु स्वामी रतनपुर तथा कालुपुर और जमीयतपुरा आदि धामो से संत आये थे। सम्पूर्ण आयोजन यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी, माणसा के महंत शा. स्वा. देवस्वरुपदासजी और श्री नरनारायण युवक मंडल, कोठारीश्री और महिला मंडल प्रेरकसेवाप्रदान किये। सभी हरिभक्त संतो की प्रेरकवाणी सुनकर धन्य हुए।(महंत स्वामी - कलोल)

लोलाडा (ता. ईडर) धाम में सद्गुरु वंदना महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूर्ण धर्मकुल के आशीर्वाद से ईडर देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा में बिराजमान सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज के शुभ सानिध्य में पू. अ.मू.स.गु. गोपालानंद स्वामी की अनुकम्पा से जिन्होने ७० वर्षो से इस भूमि को अपनी कर्म भूमि बनाये है। तथा ईडर धाम में लगातार तीनवार महंत पद पर रहे है। तथा सत्संग की सेवाप्रदान किये है। उसी प्रकार धर्मवंशी के पांच पीठी के दर्शन की तृप्तता करके १०६ वर्ष की उम्र में भगवान का स्मरण करते हुए अक्षरधाम को प्राप्त हुए। ऐसे पू. स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्यामजीवनदासजी की स्मृति में पूरा लालोडा गांव सद्गुरु वंदना महोत्सव ता. १७-१-१९ से २३-१-१९ तक स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा स.गु. स्वामी बालकृष्णदासजी द्वारा भव्य आयोजन पूर्म हुआ। जिस में श्रीमद् भावत सप्ताह पारायण, अखंड धुन, पदयात्रा जैसे

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की ओफिस नंबर

Mo. No. : 82380 01666

WhatSapp No. : 99099 67104

विविधकार्यक्रम भव्यता से मनाये । कथा के वक्तापद से स.गु.शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर) के संगीतमय कथा का हजारो लोगो ने कथा रसपान किये थे । कथा में आने वाले प्रसंगे को उल्लास पूर्वक मनया गया था ।

इस अवसर पर सभी बहनो ने गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री प.पू.अ.सौ. मोटा गादीवालश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाजश्री आकर दर्श; आशीर्वाद दिये ।

सम्पूर्ण अवसर पर संत पार्षद, स्वंय सेवक, महिला मंडल - युवक मंडल प्रेरणादीयक सेवा दिये थे ।

तीर्थो से संत-सांख्ययोगीबाई का विशाल आगमन हुआ था ।(साधु बालकृष्णदास - लालोडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा में भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा महेसाणा मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी तथा शा. उत्तमप्रिय स्वामी के आयोजन द्वारा तथा पू. शा.पी.पी. स्वामी के सुंदर मार्गदर्शन से ता. २३-१२-१८ रविवार के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया । साथ ही साथ आगामी ता. १७-२-१९ से २१-२-१९ तक मेहसाना मंदिर के दशाब्दी पाटोत्सव को उल्लास के साथ मनाया गयटा । जिसके उपलक्ष्य में १० घंटे की अखंड धुन की गई थी । जिसकी पूरणाहुति में जेतलपुर से पू. शा. पी.पी. स्वामी आकर आरती किये थे ।

महेसाणा मंदिर के शाकोत्सव में मेहसाना मोटप, करशनपुरा, देवरासण, ऊँझा, कडा, विसनगर, कानपुरा तेजपुरा, मरतोली, खेरवा आदि धामो के हरिभक्तो ने लाभ लिया । (हितेन्द्रसिंह राओल - मेहसाणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विसनगर (लालदरवाजा)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विसनगर (लालदरवाजा) में ता. ४-११-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा श्री हनुमानजी - गणपतिजीकी पुन: प्राण प्रतिष्ठा विधिवत रुप से पूर्ण हुआ । दो दिवसीय प्रतिष्ठा यज्ञ की पूर्णाहुति प.पू. महाराजश्री के शुभ हाथो से हुआ । सि अवसर पर तीर्थो से संत आये थे ।

अन्त में प.पू. महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया । सुंदर शाकोत्सव मनाया गाय । १८०० जितने भाविक भक्तो ने लाभ लेकर धन्यता अनुभव किये । गाँव के सभी हरिभक्तो और तीन कोठारी युवक मंडल ने अच्छी सेवा प्रदान किये । (कोठारीश्री विसनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप

सर्वोपरी श्रीजीमहाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा उसी प्रकार महेसाना मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी तथा शा. उत्तम स्वामी के मार्गदर्शन तथा पपभ. जी. के. पटेल, अशोकभाई आदि हरिभक्तो के सुंदर आयोजन द्वारा ६-१-१९ के दिन मोटप गाँव में श्रीहरि प्रसादी के अलौकिक स्थल पर भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । जेतलपुर धाम के पू. पी.पी. स्वामी आदि संतमंडल ने कथा-वार्ता का लाभ दिये ।

धामोधाम से संत आये थे । स.गु. गोपालानंद स्वामी द्वारा पूजा किये गये माखनिया लालजी जिने तुलसीदास भक्त ने दिया था । जिसकी आरती संत-हरिभक्तोने किया था । मोटप और उसके पास के गाँव वाले हरिभक्तने शाकोत्सव का लाभ लेकर अत्यधिक कृतार्थ हुए ।(पार्थ जी.के. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धीणोज

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पू.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा मेहसाणना मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी तथा शा. उत्तम स्वामी के मार्गदर्शन से धीणोज गाम में २५-१२-१८ से २९-१२-१८ तक श्रीमद् भागवत दशम स्कंधपारायण स.गु.शा.स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी (बीलिया) के वक्ता पद से पूर्ण हुई । प्रथम दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे ते । और यहाँ के मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का अभिषेक और आरती करके सभा को आशीर्वाद प्रदान किये । (हितेन्द्रसिंह राओल - महेसाना)

श्री स्वामिनारायण मंदिर करशनपुरा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर करशनपुरा में पवित्र खरमास में ता. ५-१-१९ को प्रात: ६ बजे मेहसाना मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी संत मंडल के साथ आये और निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती किये

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

magazine@swaminarayan.in

।तथा ६ से ७ महामंत्र की धुन हरिभ्कतो के साथ समूह में किये थे। (कोठारीश्री चतुरदास पटेल - करशनपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका खरमास में धुन और शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी के मार्गदर्शन से और कोठारी स्वामी सत्यसंकल्पदासजी के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका में बिराजमान श्री मुरली मनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध् यमें पवित्र खरमास में १६ दिसम्बर १८ से १४ जनवरी १९ तक सुबह ७-०० से ७-३० तक स्वामिनारायण महामंत्र धुनकी गयी। यहाँ पर विगत की वर्षो से खरमास में धुन पुर्व मनाया जाता है। इसमें चलोडा, साकोदरा, सिमेज आदि गाँवो के हरिभक्त अवसर पर आये थे। यहाँ के संत मंडल ने खरमास में धोलका देश के गांवो में सत्संग सभा की सुंदर प्रवृत्ति किये।

भव्य शाकोत्सव

ता. १३-१-२०१९ के दिन यहाँ दोलका मंदिर में भव् यशाकोत्सव मनाया गया था। इस अवसर पर कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी, स.गु. शा. स्वा. रघुवीरचरणदासजी (सोकली) इत्यादि संतो ने शाक वघार करके सभी को खुश किये। धोलका के शाकोत्सव की महिमा का वर्णन किये। सभा का संचालन स्वा. सरजुदासजीने किया था।

१० हजार भक्तोने शाकोत्सव ग्रहण किये। और प्रसाद लेकर धन्य हुए।(पूजारी सुरेशचंद्र रामजीभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अपन बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रति रविवार बाल सभा का आयोजन होता है। श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षानुसार धार्मिक शिक्षा दी जाती है।

ता. १६ दिसम्बर के दिन बच्चो के लिये केल का आयोजन किया गया था। बच्चे मोबाईल और टी.वी. में खोजाते है। जिसके कारण उनके स्वास्थ्य पर खराब असर पडता है। जिस कारण से औडा गार्डन में जाकर विविधप्रकार के आउटडोर गेम कराके। शारीरिक व्यायाम के बारे में जागृत किया जाता है। (प्रविण उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मथुरा मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नालंदा-२ पर खरमास में श्रीहरि नाम धुन किया गया था। सच्चिदानंद स्वामी (लुनावाणा) और शा. हरिजीवनदासजीने कथा वार्ता का लाभ दिये। श्री घनश्याम मंडल की बहनोने श्रीहरि का पूरे माह अच्छे बोजन साकर चढाये थे। (के.बी. प्रजापति)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूलीधाम की अलौकिक ज्ञानवावे शाकोत्सव

मूलीधाम निवासी परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा मूली मंदिर के महंत स.गु. स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से महामुक्त ज्ञानवावे जहाँ स.गु. ब्रह्मानंद स्वामीने मूली मंदिर के निर्माण के समय पत्थर की खान और पानी के लिए बाव श्रीहरिने भरवाड के रुप में बताये थे। वह बाव आज भी विद्यमान है। जिसका दर्शन यदि न किये हो तो अवश्य करे।

यहाँ ता. ५-१-१९ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर धामो-धाम से संत और सांख्ययोगी बहने आयी थी। पूज्य महंत स्वामी की प्रेरणा से कई हरिभक्त शाकोत्सव में यजमान बनकर लाभ उठाये। मूली देश के हजारो हरिभक्त शाकोत्सव में भाग लेकर धन्य हुए। सभा का संचालन शैलेन्द्रसिंह झालाने किया था। रसोई की सभी व्यवस्था कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने सम्भाला था। अन्य सेवा में व्रज स्वामी, घनश्याम स्वामी, ज्ञान स्वामी और भरत भगत जुडे थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर खरमास धुन

श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदसाजी के सुंदर मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर में पवित्र खरमास में ता. १५-१२-१८ से १४-१-१९ तक प्रातः मंगला आरती इसके बाद श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन प्रतिदिन जिस में १००० जितने भक्त लाभ लेते थे।

प्रतिदिन अनेक प्रकार की प्रसादी बाटी जाती थी। शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी और शा. स्वा. सत्संगसागरदासजी के कथाका सुंदर लाभ मिला। ता. १४-१-१९ के दिन १ मास की धुन के यजमानो के लिये समूह होम महापूजा तथा प्रसाद का प्रबन्धकिया गया था।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

धांगध्रा में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से उसी प्रकार प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपगादीवालाश्री की प्रेरणा से ध्रांगध्रा श्री नरनारायण देश के अन्तर्गत निर्माणाधीन मंदिर के प्रांगण में सां. कंचनबा तथा उनके शिष्य मंडल द्वारा ता. २३-१२-१८ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया । ३००० से अधिक हरिभक्तो ने शाकोत्सव में भाग लिया । तथा मूली के संत पू. भक्ति हरिस्वामी और उनके संत मंडल द्वारा कथा वार्ता की गयी । इस अवसर पर हलवद, ऊंझा, मोरबी और सुरेन्द्रनगर से सांख्ययोगी बहने भी आई थी । मोरबी मंदिर के भक्ति स्वामी, सुरेन्द्रनगर मंदिर के त्यागवल्लभ स्वामी आदि संत भी आये थे। यहाँ के धनजी भगत और दूसरे कई हरिभक्त सेवा में संलग्न थे । (अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

रणजीतगढ श्रीहरिकृष्णधाम

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. मोटे (बड़े) महाराजश्री की खुशी में तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव अर्न्तगत रणजीतगढ श्री कृष्णधाम में ता. २९-१२-१८ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । जिसमें मोरबी सुरेन्द्रनगर बापुनगर, आदि धामो से संत आये थे । तीर्थो से सांख्ययोगी बाई भी आई थी । स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजीने सर्वोपरी श्रीहरि और धर्मवंशी की महिमा महात्मय बताये थे। सत्संगी बालको द्वारा नाटक करके धर्मकुल से द्रोह करके यम-यातना दुःखो को मंचित किया गया था । हजारो हरिभक्तोने शाकोत्सव में भाग लिये थे । रमेशभाई जोशीपरा ने प्रेरणादायक सेवा दिये थे । सभा का संचालन विश्ववंदन स्वामीने किया था । (प्रति. अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहलोका) अरियाणा का १३ वाँ पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से उसी प्रकार समस्त धर्मकुल की खुशी से तथा समस्त बहनो के धर्मगुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मी स्वरुपगादीवालश्री की प्रेरणा आशीर्वाद से अखियाणा की बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर का १३ वाँ पाटोत्सव ता. ३१-१२-१८ के दिन उल्लास के साथ मनाया गया । इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे . और ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करके सभा में आशीर्वाद देते हुए बोले कि बहन अपने बच्चीयो को सत्संग की वारसाई मजबूत हो ऐसे संस्कार और शिक्षापत्री की आज्ञा को शिरोधार्य मानकर व्यवहार करे ऐसी सूचना दिये थे । इस अवसर पर सुरेन्द्रनगर मंदिर के सांख्ययोगी बहने आकर कथाव्रत का लाभ दी । हसुभाई पटेल अत्याधिक सुंदर सेवा दिये थे । (प्रति अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन धनुर्मास धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से हमारे हिन्दू श्री स्वामिनारायण मंदिर में महंत साधु सुव्रतदासजी की प्रेरणा से पवित्र खरमास में महामंत्र धुन, कीर्तन, त्रिवदिवसीय कथा गुरु, शुक्र, शनि विकेन्ड में हुआ था । तथा रविवार को सुंदर महापूजा का आयोजन किया गया था । कथा के यजमान प्रविणभाई पारेख परिवार और चिंतन पटेल तथा विशाल पटेल और गोपालभाई शाह परिवार यजमान बनकर लाभ उठाये थे। कथा का सुंदर पान सुव्रत स्वामीने करवाया था । संतो द्वारा यजमान का सन्मान किया गया था । चार दिन तक प्रसाद का आयोजन किया गया था । उस में सेवा करने वालो को सन्मान किया गया था ।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया धनुर्मास धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में दिसम्बर-जनवरी-१९ खरमास में यहाँ के पुजारी स्वामी विश्वविहारीदासजी के मार्गदर्शन से प्रातः ६-३० से ७-१५ तक श्री निष्कुलानंद काव्य हरिबल गीता पढ़ने में आई थी । प्रातः श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन से सारे विस्तार में अलौकिक दिव्य वातावरण बन गया था । पू. स्वामी प्रतिदिन श्रीहरि की लीला की कथा सुनाते थे । अन्तिम दिन भूदेवो द्वारा महापूजा की गई । यजमान परिवार और मेहमान का फूलहार से स्वागत किया गया ।

रसोई में सेवा करने वाले भक्तने सुंदर आयोजन किया था । खरमास में अनेक भक्तोने धुन का लाभ लिये । तथा धन्य हुए । (प्रवीण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अपने अनेक मंदिरो में शाकोत्सव का दर्शन

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु आये हुए ब्रिटिश हाईकमिश्नर और उनकी टीम। (२) श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरेन्टो कनाडा में शाकोत्सव दर्शन। (३) नैरोबी लंगाटा श्री स्वामिनारायण मंदिर में सभा में दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री।